Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ وَاَحْسِنُوْا ۛ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :196)

अनुवाद: और अल्लाह के मार्ग में खर्च करो और अपने हाथों से अपने आप को हलाक मत करो। और उपकार करो अल्लाह उपकार करने वालों को पसन्द करता है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 44

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

22 सफर 1439 हिजरी कमरी 1 नबुव्वत 1397 हिजरी शमसी 1 नवम्बर 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

यह धोखा न लगे कि सुन्नत और हदीस एक ही वस्तु है। क्योंकि हदीस तो सौ डेढ़ सौ वर्ष पश्चात् एकत्र की गयी। परन्तु सुन्नत का अस्तित्व क़ुर्आन शरीफ़ के साथ ही था।

सुन्नत से तात्पर्य वह मार्ग है जिस पर क्रियात्मक रूप में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा को डाल दिया था। सुन्नत उन बातों का नाम नहीं है जो सौ डेढ़ सौ वर्ष पश्चात् पुस्तकों में लिखी गयी, बल्कि उन बातों का नाम हदीस है और सुन्नत उस क्रियात्मक आदर्श का नाम है जो नेक मुसलमानों की क्रियात्मक परिस्थिति में प्रारम्भ से चला आया है, जिस पर सहस्त्रों मुसलमानों को लगाया गया।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

दूसरा साधन पथ-प्रदर्शन का जो मुसलमानों को प्रदान किया गया **सुन्नत** है अर्थात् आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वे कार्य जो आपने क़ुर्आनी आदेशों की व्याख्या स्वरूप करके दिखाए। उदाहरणार्थ- क़ुर्आन शरीफ़ में साधारण दृष्टि से देखने से **पांच समय** की नमाज़ों (उपासना) की रकआत का ज्ञान नहीं होता कि प्रात: कितनी और अन्य समयों में कितनी हैं परन्तु सुन्नत ने सब पर प्रकाश डाल दिया है। यह धोखा न लगे कि सुन्नत और हदीस एक ही वस्तु है। क्योंकि हदीस तो सौ डेढ़ सौ वर्ष पश्चात् एकत्र की गयी। परन्तु सुन्नत का अस्तित्व क़ुर्आन शरीफ़ के साथ ही था। मुसलमानों पर क़ुर्आन शरीफ़ के पश्चात् सबसे बड़ा उपकार सुन्नत का है। ख़ुदा और रसूल के दायित्व का कर्तव्य केवल दो मामले थे। वह यह कि ख़ुदा ने क़ुर्आन उतार कर अपनी वाणी द्वारा अपनी प्रजा को अपनी इच्छा से अवगत कराया। यह तो ख़ुदा के कानून का कर्तव्य था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कर्तव्य यह था कि ख़ुदा की वाणी को क्रियान्वित करके लोगों को भली भांति समझा दें। अत: रसूलुल्लाहसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वे कथनी बातें करनी के रंग में दिखला दीं और अपनी सुन्नत अर्थात् अमली कार्यवाही से कठिन और मुश्किल मामलों को हल कर दिया। यह कहना व्यर्थ है कि यह हल करना हदीस पर आश्रित था, क्योंकि हदीस के अस्तित्व से पूर्व इस्लाम धरती पर स्थापित हो चुका था।★क्या जब तक हदीसें एकत्र नहीं हुई थीं लोग नमाज़ न पढ़ते थे या ज़कात न देते थे या हज न करते थे या वैध या अवैध से परिचित न थे। हाँ तीसरा साधन **पथ-प्रदर्शन का हदीस है।** क्योंकि इस्लाम के बहुत से ऐतिहासिक, नैतिक और धार्मिक नियमों से संबंधित मामलों को हदीसें स्पष्ट करती हैं और हदीस का बड़ा लाभ यह है कि वह क़ुर्आन और सुन्नत की सेवक है। जिन लोगों को क़ुर्आन का सही ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ वे इस अवसर पर हदीस को क़ुर्आन पर निर्णायक कहते हैं जैसा कि यहूदियों ने अपनी हदीसों के विषय में कहा। पर हम हदीस को क़ुर्आन और सुन्नत का सेवक समझते हैं। स्पष्ट है कि स्वामी की शान सेवकों के होने से बढ़ती है। क़ुर्आन ख़ुदा की वाणी है और सुन्नत रसूलुल्लाह का कर्म है और हदीस सुन्नत के लिए एक समर्थक साक्षी है। (ख़ुदा हर बुराई से अपनी शरण में रखे) यह कहना अनुचित है कि हदीस क़ुर्आन को निर्णायक है। यदि क़ुर्आन पर कोई निर्णायक है तो वह स्वयं क़ुर्आन है। हदीस जो एक विचारात्मक रुतबा रखती है, क़ुर्आन पर निर्णायक कदापि नहीं हो सकती, मात्र सहयोगी प्रमाण के रंग में है। क़ुर्आन और सुन्नत ने मूल कार्य सब कर दिखाया है। हदीस केवल समर्थक साक्षी है। हाँ सुन्नत एक ऐसी वस्तु है जो क़ुर्आन का उद्देश्य प्रकट करती है, और सुन्नत से तात्पर्य वह मार्ग है जिस पर क्रियात्मक रूप में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा को डाल दिया था। सुन्नत उन बातों का नाम नहीं है जो सौ डेढ़ सौ वर्ष पश्चात् पुस्तकों में लिखी गयी, बल्कि उन बातों का नाम हदीस है और **सुन्नत** उस क्रियात्मक आदर्श का नाम है जो नेक मुसलमानों की क्रियात्मक परिस्थिति में प्रारम्भ से चला आया है, जिस पर सहस्त्रों मुसलमानों को लगाया गया। हाँ हदीस भी, यद्यपि कि उसका अधिकांश भाग विचारात्मक स्तर पर है, परन्तु यदि वह क़ुर्आन और सुन्नत की विरोधी न हों तो अनुसरण करने योग्य है और क़ुर्आन व सुन्नत की समर्थक है। अधिकांश इस्लामी मामलों का भण्डार उसके अन्दर मौजूद है। **अत: हदीस** के महत्त्व को न समझना इस्लाम के एक भाग को काट देना है। हाँ यदि कोई ऐसी हदीस जो क़ुर्आन और सुन्नत की विरोधी हो तथा ऐसी हदीस की विरोधी हो जो क़ुर्आन के अनुकूल है या उदाहरणार्थ एक ऐसी हदीस जो सही बुखारी के विपरीत है तो वह हदीस स्वीकार योग्य नहीं होगी, क्योंकि उसे स्वीकार करने से क़ुर्आन को और उन समस्त हदीसों को जो क़ुर्आन के अनुकूल हैं रद्द करना पड़ता है और मैं जानता हूँ कि कोई संयमी मुसलमान इसका साहस नहीं करेगा कि ऐसी हदीस पर आस्था रखे कि

शेष पृष्ठ 8 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, मई 2016 ई (भाग-12)

☆ तरबियत के हवाले से नासरात की सैक्रेटरी ने कहा कि नया स्लेबस बनाए जा रहे हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: आपका साल अक्टूबर में शुरू नहीं होता। इस पर बताया गया कि साल इज्तिमा के बाद मई में शुरू होता है। उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि सारी दुनिया में एक ही सिद्धांत चलेगा। अक्टूबर से लेकर सितंबर तक और इज्तिमा जब मर्ज़ी करें। यदि नई सदर हो तो अक्तूबर से काम करेगी। इस तरह से अनियमितता पैदा होती है। दस्तूर असासी का पालन करें। लजना का आमला का और वित्तीय वर्ष, अक्टूबर से सितंबर तक है। सितंबर, अक्टूबर में एक केंद्रीय स्थान पर अपने इज्तिमा रख लिया करें और सदर का चयन कर लिया करें। जिस साल नहीं होता उस वर्ष करने की आवश्यकता नहीं है। दो साल बाद, अपनी शूरा के इज्लास में अपने सदर का चयन किया करें। इस का इज्तिमा से कोई संबन्ध नहीं इज्तिमा जब चाहें करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: नासरात को भी कपड़ों के संदर्भ में बताएं। दस साल से ग्यारह साल तक की बच्चियों का ध्यान शर्म की तरफ करवाएं। यदि आप ग्यारह वर्ष की आयु से इस तरफ ध्यान दिलवाएंगे तो ध्यान पैदा होगा। एक स्कार्फ या लंबी शर्ट पहनें। 13 साल की उम्र में कुछ लड़कियों को स्कार्फ की ज़रूरत पड़ जाती है। पहले लज्जा पैदा करने की कोशिश करें। इसके लिए, बच्चों को कुरआन की विभिन्न आयतें , हदीसें और हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उद्धरण और ख़लीफाओं को उपदेशों को लेकर भेजती रहा करें। ख़ुद ही असर होता रहेगा। बड़े होकर तरबियत करने की कोशिश करते हैं तो असर नहीं होता। असली बात लज्जा का पैदा होना है। बाकी सब अपने आप ठीक हो जाऐंगी।

राष्ट्रीय मज्लिस आमला लजना स्वीडन की हुज़ूर अनवर से मुलाकात, स्वीडिश नेशनल टेलीविजन sverges television vast की जर्नलिस्ट का हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से इनट्रवियू। फैमली मुलाकातें

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

20 मई 2016 (दिनांक जुम्अतुल मुबारक)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया ने सुब्ह 3 बजकर45 मिन्ट पर पधार कर मस्जिद नासिर में नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद,हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर गए।

सुबह में, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ कार्यालय के मामलों में व्यस्त रहे।

आज शुक्रवार का मुबारक का दिन था और मस्जिद नासिर गौथन बर्ग (स्वीडन) से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का यह दूसरा ख़ुत्बा था जो mta द्वारा दुनिया भर में सीधे लाइव प्रसारण हो रहा था। इससे पहले ग्यारह साल पहले, 16 सितंबर 2005 ई को, हुज़ूर अनवर ने मस्जिद नासिर गोथनबर्ग में ख़ुत्बा जुम्अ: दिया था जो एमटीए पर लाइव प्रसारित किया गया था।

अपने प्यारे आक़ा के अनुसरण में शुक्रवार की नमाज़ अदा करने के लिए स्वीडन की जमाअतों के अलावा डेनमार्क, नॉर्वे, फिनलैंड, ब्रिटेन और जर्मनी से जमाअत के दोस्त और परिवार बड़ी संख्या में गौथन बर्ग स्वीडन पहुंचे थे। स्वीडन की जमाअतों और पड़ोसी देशों ट्रक के माध्यम से सफर कर के आने वाले बहुत लम्बी दूरी तय कर के आए थे।

माल्मो से 274 किलोमीटर, कलमार से आने वाले 350 किलोमीटर, स्टॉकहोम से 483 किलोमीटर और लोलियो से आने वाली फैमिली 1500 किलोमीटर से अधिक का रास्ता तय कर के गोथनबर्ग पहुंचीं थीं।

पड़ोसी देशों से आने वालों में नॉर्वे से आने वाले 295 किलोमीटर और डेनमार्क से आने वाले 321 किलोमीटर और फिनलैंड से से आने वाले 1082 किलोमीटर का सफर तय कर के आए थे।

सुबह से ही जमाअत के लोगों के आने का क्रम शुरू था। मस्जिद के अलावा दोनों प्रमुख हॉल और मार्कीज़ नमाज़ियों से भरे हुए थे और लगभग कुल हाज़री 1300 से अधिक थी।

स्वीडिश नेशनल टेलीविज़न (जो देश के पश्चिमी हिस्से को कवर करता है) की टीम मस्जिद नासिर गोथन बर्ग, कुछ दृश्यों, को फिल्माने के लिए आई हुई थी।

दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने मस्जिद नासिर में तशरीफ ला कर ख़ुत्बा जुम्अ: पढ़ा। यह ख़ुत्बा जुम्अ: अखबर बदर में प्रकाशित हो चुका हे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के इस ख़ुत्बा जुम्अ: का स्वीडिश भाषा में सीधे अनुवाद किया गया।

यह ख़ुत्बा जुम्अ: 3 बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ असर पढ़ाई। नमाज़ों को अदा करने के बाद, हुज़ूर अनवर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ अपने दफतर तशरीफ ले गए।

उसके बाद स्वीडिश नेशनल टेलीविजन sverges television vast जो कि स्वीडन के पश्चिमी भाग को cover करता है उसकी जर्नलिस्ट ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का इनट्रवियू लिया।

महोदया पत्रकार ने पहला सवाल पूछा कि जुम्अ: के बाद आप क्या करेंगे?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : जहां भी मैं जाता हूं, वहां हमारी जमाअत के लोग होते हैं, और मैं अपने समुदाय के लोगों से मिलता हूं। उस के बाद मैं शाम को परिवार के सदस्यों से मिलूंगा। कुछ आधिकारिक कार्यक्रम भी हैं।

इस के बाद महोदया ने पूछा कि आप का शहर गॉथेनबर्ग के बारे में क्या विचार हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : हमारे स्वीडिश जमाअन की एक बड़ी संख्या यहां गोथनबर्ग में रहती है, यही कारण है कि मैं गोथेनबर्ग आया हूं।

उसके बाद, महोदया ने कहा कि हमें जिन समस्याओं का सामना है उनमें एक उग्रवाद भी है, आप इसके बारे में क्या कहेंगे?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : इस्लाम को अतिवाद के साथ जोड़ा जा रहा है, वरना इस्लाम के भीतर उग्रवाद के लिए कोई जगह नहीं है। जहां तक धर्म का संबंध है, कुरआन ने बहुत स्पष्टीकरण के साथ कहा है कि धर्म आपके दिल का विषय है। कोई बाध्यता नहीं है। जहां तक रसूल के अपमान तथा कुरआन के अपमान की बात है तो रसूले करीम

पृष्ठ 9 पर शेष

ख़ुत्बः जुमअः

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दो जलील क़द्र सहाबा, इताअत व निष्ठा से परिपूर्ण हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद और हज़रत कदामह बिन मज़ऊन रज़ियल्लाहो अन्हुमा की सीरत ईमान वर्धक पहलुओं का वर्णन।

मुझे भी अपनी उम्मत के लिए वह पसन्द है जो इब्ने मसूद ने पसंद किया।"

बावजूद इस बात के कि सहाबा बिल्कुल अनपढ़ थे, सारे मक्का में कहा जाता है कुल सात आदमी पढ़े लिखे थे लेकिन सारी दुनिया पर ये लोग छा गए। तो यह आज्ञापालन था कि जगह हासिल की और जीता। तो यह विशेष बिंदु हमेशा याद रखना चाहिए।

राष्ट्रों के विकास के लिए असली बात आज्ञापालन है।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमेशा विभिन्न अवसरों पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद के तरीके की सराहना की।

सुन्नते रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुसार इब्ने मसूद केवल जुम्मेरात के दिन नसीहत किया करते थे जो बहुत ही कम और व्यापक होता था।

यह यतीम बच्ची है इस की शादी इस की इच्छा के अनुसार होगी।

आदरणीया अमतुल हफीज़ भट्टी साहिबा पूर्व सदरी लजना इमाउल्लाह कराची और आदरणीया अदनान वेनडन ब्रूक साहिब राष्ट्रीय सचिव अमूरे ख़ारजा जमाअत अहमदिया बेल्जियम का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 5 अक्तूबर 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ
اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुत्बा में सहाबा के उल्लेख में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद के बारे में बयान कर रहा था और उनकी क्योंकि पर्याप्त रिवायतें हैं उनकी अपनी भी और उनके बारे में दूसरों की भी कुछ रिवायतें रह गई थीं जो अब मैं बयान करूँगा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद के बारे में बुज़ुर्ग सहाबा कहा करते थे कि अब्दुल्लाह बिन मसूद अल्लाह तआला निकटता और संबंध में असामान्य स्थान रखते थे और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने जिन सहाबा के नमूने को हिदायत का मार्ग बनाने के लिए खास तौर से हिदायत फ़रमाया करते थे उन में हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर के नाम के हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद का नाम भी शामिल था। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अब्दुल्लाह बिन मसूद के तरीके को कसकर पकड़ो।

(जामेअ अत्तिरमिज़ी बाब मनाक़िब अब्दुल्लाह बिन मसूद हदीस 3805)

एक रिवायत है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को एक विशेष विश्वास था आप पर था और अब्दुल्लाह बिन मसूद को भी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात से एक असामान्य इश्क था। उनकी कुछ घटनाओं को मैं ने भी उल्लेख किया था। अन्य भी घटनाएं हैं, कुछ विभिन्न दृष्टिकोणों से वर्णित किया गया है।

उनके बारे में लिखा है कि बातनी लिहाज़ से नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सोहबत ने इब्ने मसूद यानी अब्दुल्लाह बिन मसूद को एक मुत्तकी, परहेज़गार और इबादत करने वाला व्यक्ति बना दिया था। इबादत और नफल का इतना शौक था कि फर्ज़ नमाज़ों और तहज्जुद के बाद चाशत के समय की नमाज़ों का भी बहुत ध्यान रखते थे। इसी तरह हर सोमवार और जुम्मेरात को नफली रोज़े रखा करते थे, और फिर भी यह इहसास रहता कि वह कम रोज़े रखते हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद फरमाया करते थे कि तहज्जुद के अदा करने के लिए शरीर में कमज़ोरी महसूस होने लगती है। (तहज्जुद भी बड़ी लंबी और असामान्य रूप से लम्बी पढ़ा करते थे और यदि वास्तव में हक़ अदा करते हुए नवफलों और तहज्जुद को अदा किया जाए तो इंसान बड़ी कमज़ोरी महसूस करता है।) इसलिए कहते थे कि नमाज को रोज़े पर प्राथमिकता देते हुए अपेक्षाकृत कम नफली रोज़ों की व्यवस्था करता हूँ।

(सीरत सहाबा रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम , हाफिज़ मुजफ्फर अहमद, पृष्ठ 283 प्रकाशन नज़ारत इशाअत रब्वा, 2009 ई)

एक बार नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लघु भाषण के बाद हज़रत अबु बकर से फरमाया कि अब वह लोगों को उपदेश करें, यानी हज़रत अबूबकर उपदेश करें। हज़रत अबू बकर ने एक संक्षिप्त उपदेश किया और फिर हज़रत उमर से फरमाया। उन्होंने हज़रत अबू बकर से भी संक्षिप्त अपदेश किया। फिर किसी अन्य आदमी ने फरमाया तो उस ने लम्बी तकरीरें शुरूं कर दीं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उससे फरमाया, बैठ जाओ या फरमाया चुप रहो। तब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अब्दुल्लाह बिन मसूद से तकरीर के लिए कहा। उन्होंने अल्लाह तआला की प्रशंसा की और इस के बाद केवल यह का कि, हे लोगो! अल्लाह तआला हमारा रब्ब है, कुरआन हमारा मार्ग दर्शक है, बैयतुल्लाह हमारा किब्ला है और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे नबी हैं। और एक दूसरी रिवायत में है कि उन्होंने कहा कि हम अल्लाह तआला के रब्ब होने और इस्लाम के धर्म होने पर सहमत हैं और मुझे तुम्हारे लिए वह पसंद है जो अल्लाह तआला और उसके रसूल को पसंद है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस पर फरमाया कि इब्न मसूद ने सही कहा और मुझे भी अपनी उम्मत के लिए वह पसंद है जो इब्ने मसूद ने पसंद किया।

(सीरत सहाबा रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम , हाफिज़ मुजफ्फर अहमद, पृष्ठ 284-258 प्रकाशन नज़ारत इशाअत रब्वा, 2009 ई)

हज़रत अली जब कूफा में तशरीफ ले गए तो आपकी मज्लिस में अब्दुल्लाह बिन मसूद का कुछ उल्लेख था। यह वहां पहले रह चुके था। लोगों ने उनकी सराहना की, हे अमीरुल मोमिनीन! हम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद से बढ़कर उच्च नैतिकता वाला और नरमी से शिक्षा देने वाला और अच्छा साहचर्य और मजलिस करने वाला और बहुत ख़ुदा से भय करने वाला और कोई नहीं देखा। हज़रत अली ने परीक्षण के लिए उन सभी को संबोधित कर कहा कि मैं तुम्हें अल्लाह तआला की कसम देकर पूछता हूं कि सच बताओ कि अब्दुल्लाह बिन मसूद से संबंधित गवाही ईमानदारी से करते हो। सब ने हां कहा। इस पर हज़रत अली ने कहा, हे अल्लाह! गवाह रहना हे अल्लाह! मैं भी अब्दुल्लाह बिन मसूद के बारे में यही राय रखता हूं जो उन लोगों की है बल्कि इससे भी बेहतर राय रखता हूँ।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 115 अब्दुल्लाह बिन मसूद दारुल कुतूब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद ने अपने धार्मिक भाई हज़रत ज़ुबैर बन अलअवाम के साथ नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थापित किए गए भाईचारे का हक भी ख़ूब अदा किया। उन पर पूर्ण विश्वास व्यक्त करते हुए यह वसीयत फ़रमाई कि मेरे सारे वित्तीय मामलों की निगरानी और काम, यानी सभी काम जो हैं

उन्हें संभालना तथा जो मेरी संपत्ति पीछे रह जाएगी, हज़रत ज़ुबैर बिन अलअवाम और उनके पुत्र अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के जिम्मे हैं। और परिवार के मामलों में उनके निर्णय निश्चित रूप से और लागू होंगे।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 118 अब्दुल्लाह बिन मसूद दारुल कुतूब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

अबू-वाइल से रिवायत है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद ने एक व्यक्ति की तह बंद टखने से नीचे देखा तो उसे टखने के ऊपर करने के लिए कहा। इस पर, उस व्यक्ति ने आपको जवाब दिया कि आप भी अपने तह बन्द टखनों के ऊपर कर लें। आप ने फरमाया कि मैं तुम्हारी तरह नहीं हूं। मेरी पिंडलियां बारीक हैं और मैं दुब्ला भी हूँ। हज़रत उमर को इस घटना की ख़बर हुई तो उन्होंने उस व्यक्ति को इब्ने मसूद से इस तरह संबोधित होने और जवाब देने के कारण सज़ा भी दी।

(अल्असाबा फी तमीज़ सहाबा जिल्द 4 पृष्ठ 201 अब्दुल्लाह बिन मसूद दारुल कुतूब इल्मिया बैरूत 1995)

यह भी हो सकता है कि उस व्यक्ति में अहंकार हो और उस ज़माने में अहंकार की वजह से कपड़े लंबे रखने का रिवाज था तो उस पर उन्होंने उसे समझाया हो और उसने बिना देखे कि यह कितने विनम्र व्यक्ति हैं और अल्लाह तआला के आदेश पर कितना अमल करने वाले हैं और अल्लाह तआला की कितनी ख़शियत है आगे यह उत्तर दिया और हज़रत उमर को जब पता लगा तो आप ने उसकी सरज़निश की।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद के आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में हज़रत ख़लीफ़ुतल मसीह सानी एक जगह इस तरह बयान किया है कि हदीसों में एक घटना आती है जिससे पता लगता है कि उनमें कितनी अनुपालन की रूह पाई जाती थी। ज़ाहिरी तौर पर वह एक ऐसी बात है जिसे सुनकर कोई व्यक्ति कह सकता है यह कैसी मूर्खता की बात है लेकिन जैसा कि मैंने कहा (हज़रत ख़लीफा सानी फरमाते हैं कि) उनकी तरक्की का राज़ इसी में निहित था कि वह नबी सल्लल्लाहो अलैहि की ज़ुबान से कोई आदेश सुनते थे तो वह इसका पालन करने के लिए तैयार हो जाते। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी बयान कर रहे हैं कि हदीसों में आता है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद एक बार नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मज्लिस की तरफ आ रहे थे तो आप अभी गली में ही थे कि आप के कान में नबी सल्लल्लाहो की आवाज़ बैठने के लिए आई। मालूम होता है कि भीड़ अधिक हो गई और कुछ लोग किनारों पर खड़े होंगे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें कहा कि बैठ जाओ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद जो अभी मज्लिस में नहीं पहुंचे थे और सड़क में उन्होंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह आवाज़ सुनी तो वहीं बैठ गए और बैठे-बैठे जैसे बच्चे चलते हैं घिसट घिसट कर मस्जिद में पहुंचे। किसी व्यक्ति ने जो इस राज़ को नहीं समझता था कि आज्ञापालन और अनुपालन की रूह ही दुनिया में राष्ट्रों को कैसे सफल करती है जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद को इस तरह चलते देखा तो उसने आपत्ति जताई और कहा कि यह कैसी मूर्खता की बात है। वह उसे बेवकूफ़ समझ रहा था। उन्हें नहीं पता था कि क़ौमों की तरक्की के लिए असली बात अनुपालन करना है। बहरहाल उसने उससे कहा कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मतलब तो यह था कि मस्जिद में जो लोग किनारों पर खड़े हैं वे बैठ जाएं लेकिन आप सड़क में ही बैठ गए और घसिटते हुए मस्जिद में आए हैं। आप को चाहिए था कि जब आप मस्जिद में पहुंचते तब बैठते, सड़क में बैठ जाने का क्या लाभ था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद ने कहा हाँ हो तो सकता था लेकिन अगर मस्जिद पहुंचने से पहले ही मर जाता तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह आदेश मेरे अनुपालन में न आता और कम से कम एक बात ऐसी ज़रूर रह जाती जिस पर अनुपालन नहीं किया अब यह शौक था उन लोगों का कि कोई बात जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुंह से निकले यह न हो कि हम उस पर अमल न करें। इस पर उन्होंने कहा मैंने यह बात सुनी और मुझे यह चिंता पैदा हुई कि अगर इस दौरान मर जाता तो मेरे आमाल नामे में कहीं यह न लिखा जाए कि यह एक अंतिम बात थी जिस पर आप ने सुनने के बावजूद पालन नहीं किया। तो बहरहाल उन्होंने उससे कहा कि इसलिए मैंने उचित नहीं समझा कि मैं चलता हुआ आऊं और मस्जिद में आ कर बैठूँ। मैंने सोचा कि जीवन का क्या भरोसा है शायद मस्जिद में पहुँचूं या न पहुँचूं इसलिए अभी बैठ कर जाना चाहिए ताकि इस आदेश पर भी अमल हो। ये लोग इतनी बारीकी से चीज़ों को देखने वाले थे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो और लिखते हैं कि इन्हीं अब्दुल्लाह बिन मसूद की घटना है कि हज़रत उसमान रज़ियल्लाहो अन्हो ने अपने ख़िलाफत के समय में एक बार हज के दिनों में मक्का में चार रकअतें पढ़ीं। हज पर गए हुए थे, ठहरना थोड़ा था, चार रक़अतें पढ़ीं। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब हज के लिए आए थे, तो आप ने वहाँ दो रकअतें पढ़ी थीं क्योंकि मुसाफिर को दो रकअतें नमाज़ पढ़ने का ही आदेश है। फिर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहो अन्हो अपने ख़िलाफत के समय में आए तो आप भी दो ही रकअतें पढ़ीं। उमर रज़ियल्लाहो अन्हो हज के लिए आए तो उन्होंने भी दो ही पढ़ीं यानी कसर नमाज़ का जहां आदेश है वहाँ कसर की। परन्तु हज़रत उसमान रज़ियल्लाहो अन्हो ने चार रकअतें पढ़ा दीं। इस पर लोगों में एक शोर बरपा हो गया, बड़ा शोर मचाया लोगों ने और उन्होंने कहा कि हज़रत उसमान ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत को बदल दिया है। अत: हज़रत उसमान लोगों के पास आए और उन्होंने पूछा कि आपने चार रक़अतें क्यों पढ़ी हैं? हज़रत उसमान रज़ियल्लाहो अन्हो ने फरमाया कि बात यह है कि मैंने एक इज्तेहाद किया और वह यह इज्तेहाद था कि अब दूर के लोग मुसलमान हो गए हैं। बहुत से लोग दूर दूर से हज के लिए आने लगे हैं और उनमें से ज्यादातर अब इस्लामी मस्लों को पहले की तरह नहीं जानते हैं। अब वे केवल हमारे कार्यों को देखते हैं। वे देखते हैं कि हम पुराने मुस्लिम कैसे कर रहे हैं, और जिस रंग में वे हमें कोई काम करता देखते हैं उसी रंग में करना शुरू करते हैं और कहते हैं कि यही इस्लाम का आदेश है। ये लोग चूंकि मदीना में बहुत कम आते हैं और उन्हें वहाँ रहकर हमारी नमाज़ें देखने का मौका नहीं मिलता तो इसलिए मैंने यही सोचा कि अभी हज के अवसर पर उन्होंने मुझे दो रकअत नमाज़ पढ़ते देखा, छोटा करते देखा तो अपने क्षेत्र में जाते ही कहने लग जाएंगे कि ख़लीफा को हम ने दो रकअत नमाज़ पढ़ाते देखा है इसलिए इस्लाम का असल आदेश यही है कि दो रकअत नमाज़ पढ़ी जाए। हज़रत उस्मान ने कहा कि जब यह अपने क्षेत्र में जा के बताएंगे तो लोग चूंकि इस बात से अपरिचित होंगे कि दो रकअतें सफर के कारण कसर नमाज़ पढ़ी गई है इस लिए इस्लाम में मतभेद पैदा हो जाएगा और लोगों को ठोकर लगेगी। यह उसमान ने इज्तेहाद किया। तो हज़रत उसमान ने कहा, मैं समझता हूं कि मैं चार रक़अतें नमाज़ पढ़ा दूं ताकि नमाज़ की चार रकअतें इन्हें न भूलें। बाकी रहा यह सवाल कि मेरे लिए चार रकअतें पढ़ने के लिए अनुमति कैसे हो गई। हज़रत उसमान ने यह भी जवाब दिया, मैंने क्यों चार रक़अतें पढ़ीं हैं और यह मेरे लिए जायज़ क्यों है? आपने उत्तर दिया कि मैंने यहां शादी की है, मक्का में शादी कर चुका हूं और पत्नी का सारा परिवार वहां था, सुसराल वहां थी। चूंकि पत्नी की मातृभूमि में भी अपनी मातृभूमि है, इसलिए मैं समझता हूं कि मैं मुसाफिर नहीं हूं और मुझे पूरी नमाज़ पढ़नी चाहिए।

उसने अपने इज्तेहाद की यह एक दलील उन्होंने दी। अत: हज़रत उसमान रज़ियल्लाहो अन्हो ने चार रकअतें नमाज़ पढ़ाने का यह कारण वर्णन किया और इस का उद्देश्य आपने यह बताया कि बाहर के लोगों को धोखा न लगे और वे इस्लाम की सही शिक्षा को समझने में ठोकर न खाएं। उनकी यह बात भी बहुत सुक्ष्म थी, यह एक बड़ी गहरी बात थी , और जब सहाबा ने सुनी, तो ज्यादातर लोग समझ गए और जो न समझ सके, लेकिन चुप रहे। लेकिन अन्य लोगों ने जो फित्ना बनाने वाले थे उन्होंने शोर मचा दिया और कहना शुरू कर दिया कि हज़रत उसमान ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत के ख़िलाफ अनुकरण किया है। तो जो चिल्ला रहे थे, फित्ना पैदा कर रहा थे, उन में से कुछ अब्दुल्लाह बिन मसूद के पास आए और कहा, आपने देखा है कि आज क्या हुआ। अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क्या किया करते थे और आज उस्मान ने क्या किया? इन लोगों ने अब्दुल्लाह बिन मसूद को कहा कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो हज के दिनों में मक्का आकर केवल दो रकअतें पढ़ाया करते थे मगर हज़रत उसमान ने चार रकअतें पढ़ाईं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद ने यह सुनकर कहा कि देखो हमारा काम यह नहीं कि हम फित्ना पैदा करे क्योंकि समय के ख़लीफा ने किसी ज्ञान के अधीन ही ऐसा काम क्या होगा, कोई हिक्मत होगी जो हमें समझ नहीं आई। अत: तुम फित्ना पैदा न करो। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद ने कहा कि मैंने भी उन के अनुसरण में चार रकअतें ही पढ़ी हैं। मैं भी नमाज़ पढ़ने वालों में शामिल था और मैं भी चार रकअतें ही पढ़ी हैं लेकिन नमाज़ के बाद मैंने हाथ उठा कर अल्लाह तआला से दुआ मांगी कि ख़ुदाया तो इन चार रकअतों में से मेरी वही दो रकअतें क़ुबूल फ़रमा जो हम नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ पढ़ते थे और बाकी दो रकअतों को मेरीनमाज़ न समझना। हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं यह कैसा प्रेम का रंग है जो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद में पाया जाता था कि उन्होंने चार रकअतें पढ़ तो लीं लेकिन उन्हें वह सवाब भी पसंद नहीं आया जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पढ़ी हुई दो रकअतों से अधिक था और दुआ की

कि दो रकअतें ही स्वीकार करना चार स्वीकार नकरना। अब जो मुक्तदी था उन्होंनें समय के की ख़लीफा के पीछे चार रकअतें पढ़ लीं और आज्ञापालन में पढ़ीं थीं। नमाज़ का भी सवाब है आज्ञापालन के लिए भी एक इनाम है, लेकिन अब्दुल्लाह बिन मसूद का अपना सिद्धांत था। उन्होंने कहा कि आज्ञारालन मैंने कर लिया लेकिन अल्लाह तआला से यह दुआ की कि मैं यह नहीं चाहता कि इससे अधिक इनाम लूं जितना कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमारे सामने नमाज़ें पढ़ कर हमें हासिल करने वाला बनाया और इसलिए दुआ की कि अल्लाह तआला दो रकतों को स्वीकार करना ।

और फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद लिखते हैं कि ख़िलाफत के पालन का कितना अच्छा नमूना है। उन्हें नहीं पता था कि हज़रत उसमान ने किस कारण से दो के बजाय चार रक़अतें पढ़ाई हैं, हालांकि यही कारण है कि बहुत से लोग इसे सही मानते हैं। वह पत्नी के घर जाते हैं तो उसे यात्रा नहीं समझते, बेटे के घर जाते हैं तो उसे यात्रा नहीं समझते, माता-पिता के घर जाते हैं तो उसे यात्रा नहीं समझते तो यह मस्ला ठीक था। और फिर, हज़रत उसमान रज़ि अल्लाह तआला अन्हों की यह सावधानी के बाहर ले लोगों को धोखो न लग जाए और इस्लाम में कोई मतभेद न पड़ जाए इन के उच्च स्तर के तक्वा का सबूत है। हज़रत उस्मान का भी यह बड़ा उन्नत स्तर का तक्वा था इरादा था कि लोगों को ठोकर न लगे लेकिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद को तब तक इस हिक्मत का ज्ञान नहीं था कि क्या कारण था कि हज़रत उसमान के चार रकअतें पढ़ने की लेकिन उन्होंने यह नहीं किया आपने नमाज़ छोड़ दी है। बल्कि उन्होंने नमाज़ भी पढ़ी और ख़िलाफत का भी पालन किया और बाद में अल्लाह तआला से दुआ की हे अल्लाह! मेरी दो रकअतें ही स्वीकार हों चार न हों। यह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कदम पर चलने की रूह थी और आज्ञाकारिता की भावना थी जो उन में पाई जाती थी। यही कारण था कि बावजूद इस के कि के सहाबा बिल्कुल अनपढ़ थे, सारे मक्का में कहा जाता है कुल सात आदमी पढ़े लिखे थे लेकिन सारी दुनिया पर ये लोग छा गए।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद जिल्द 22 पृष्ठ 106 से 109)

अत: यह आज्ञाकारिता थी जिससे वह स्थान उन्हें प्राप्त हुआ और विजय प्राप्त की। तो यह विशेष बिंदु हमेशा याद रखना चाहिए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद के इस कर्म से समय के ख़लीफा का पालन भी व्यक्त हो गया और इश्के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उच्च स्थान को भी व्यक्त किया गया। इसीलिए पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने विभिन्न अवसरों पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद के तरीके की हमेशा सराहना फ़रमाई और यही वास्तविक तरीका है फ़ितनों से बचने का। अत: यह वह आदर्श है जो हर अहमदी के लिए मार्ग दर्शक है।

एक बार हज़रत उमर रात के समय एक काफिले से मुलाकात की। अंधेरे की वजह से काफिला वालों को देखना संभव नहीं था। इस काफिला में अब्दुल्लाह इब्न मसूद भी मौजूद थे। हज़रत उमर ने एक आदमी से काफिला के लोगों से पूछने के लिए भेजा कि वह कहां से आए हैं? उस आदमी के पूछने पर अब्दुल्लाह बिन मसूद ने उत्तर दिया। फज्जे अमीक। फिर पूछा, तुम कहाँ जा रहे हो? तो उन्होंने जवाब दिया बैयते अतीक। अर्थात ख़ाना काबा जा रहे हैं। हज़रत उमर ने पूछा कि क्या उन लोगों में कोई आलिम है? फिर एक आदमी को आदेश दिया कि उन को आवाज़ देकर पूछू कि कुरआन की सबसे बड़ी आयत कौन सी है? इस काफिला में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद थे उन्होंने ही उस व्यक्ति को उत्तर दिया, हज़रत उमर के पुछवाने पर कि कौन सी आयत महान आयत है

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ

(अलबक़रा: 256) फिर पूछा कि कुरआन की कौन सी आयत मुहकम तरीन है। तो रिवायत में आता है कि हज़रत अब्दुल्लाह इब्न मसूद ने उत्तर दिया

اِنَّ اللّٰهَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآئِ ذِی الْقُرْبٰی

(अलनहल 91) हज़रत उमर ने उस आदमी से यह पूछने का कहा कि कुरआन की जामेअ तरीन आयत कौन सी है? इस पर अब्दुल्लाह बिन मसूद ने उत्तर दिया कि

فَمَنْ یَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَیْرًا یَّرَهٗ ۔ وَمَنْ یَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا یَّرَهٗ ۔

(सूरह अज़्ज़िलज़ाल) फिर पूछा कि कुरआन की सब से अधिक भय के बारे में बताने वाली आयत कौन सी है इस पर अब्दुल्लाह बिन मसूद ने यह आयत बताई कि

لَیْسَ بِاَمَانِیِّکُمْ وَلَآ اَمَانِیِّ اَهْلِ الْکِتٰبِ ۔ مَنْ یَّعْمَلْ سُوْٓءًا یُّجْزَ بِهٖ ۔ وَلَا یَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِیًّا وَّلَا نَصِیْرًا

(अन्निसा 124) हजरत उमर ने उन से पूछा कि न से कहो कि कुरआन की सब से अधिक उम्मीद दिलाने वाली आयत कौन सी है जिस पर अब्दुल्लाह बिन मसूद ने जवाब दिया कि

قُلْ یٰعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓی اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۔ اِنَّ اللّٰهَ یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِیْعًا ۔ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ

(अज़ुज़ुमर 54) इन सभी बातों को सुनने के बाद, हज़रत उमर ने उन से कहा: उनसे पूछो, क्या अब्दुल्लाह बिन मसूद तुम्हारे बीच है? काफिला के लोगों ने कहा क्यों नहीं अल्लाह की कसम हमारे बीच में मौजूद हैं। हज़रत उमर को इस बात का पता था कि आप फिक्का के ज्ञान से भरे हुए हैं

(उद्धरित नकूशे सहाबा खालिद मुहम्मद खालिद अनुवाद तहज़ीब इरशाद रहमान पृष्ठ 68-69 इरफान अफज़ल प्रेस बंद रोड लाहौर)और यह सारे उत्तर सुनकर हज़रत उमर को बेशक पता लग गया होगा कि अब्दुल्लाह बिन मसूद ही इस तरह के ज्ञान वाले उत्तर दे सकते हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद का कहना है कि मुहर्रम के दिन बदर के दिन, आं हजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा से पूछा कि तुम उन कैदियों के बारे में क्या कहते हो? हज़रत अबू बकर ने कहा, हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ये लोग आपकी क़ौम और आपके परिवार से हैं। इन्हें माफ कर के इन के साथ नर्मी व्यवहार इन के साथ करें शायद अल्लाह तआला उन्हें तौब: की तौफीक प्रदान करे। तब हज़रत उमर ने कहा, हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन लोगों ने आपको अस्वीकार किया और आप को तंग किया इन की गर्दनें उड़ा दें। फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने राय दी कि हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप घने वृक्षों वाला जंगल तलाश करें और उन्हें इसमें प्रवेश कर के आग लगा दें। अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सभी की राय सुनी लेकिन कोई निर्णय नहीं लिया और अपने तम्बू में गए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद का कहना है कि लोगों ने एक-दूसरे से बात करना शुरू कर दीं, कि देखें अब किस की राय पर अनुकरण होता है। थोड़ी देर बाद आं हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तम्बू से बाहर आए और फरमाने लगे अल्लाह तआला कुछ लोगों के दिलों को इतना नरम कर देता है कि वह दूध भी अधिक नर्म हो जाते हैं और कुछ लोगों के दिलों को इतना कठोर कर देता है कि वे चट्टान से भी अधिक कठोर हो जाते हैं और हे अबू बकर तुम्हारा उदाहरण इब्राहीम जैसीा है उन्होंने कहा

فَمَنْ تَبِعَنِیْ فَاِنَّهٗ مِنِّیْ وَمَنْ عَصَانِیْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ

(इब्राहीम 37) कि जिसने मेरा अनुकरण किया तो वह बेशक मुझ में से है और जिसने मेरी बात नहीं मानी तो निश्चय तो तू बहुत क्षमाशील और फिर बहुत दयालु है। और फिर यह भी फरमाया कि अबू बकर तुम्हारा उदाहरण ईसा जैसा है उन्होंने फरमाया था

اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۔ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ

(अल्माइद:119) कि यदि तू उन्हें सज़ा दे तो आख़िर यह तेरे बन्दे हैं, यदि उन्हें माफ कर दे तो बेशक तो पूर्ण प्रभुत्व वाला और समझदार है। और हज़रत उमर को कहा कि तुम्हारा उदाहरण हज़रत नूह अलैहिस्सलाम जैसी है जैसे उन्होंने फरमाया था

رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَی الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ دَیَّارًا ۔

(नूह: 27) कि हे मेरे रब्ब! काफिरों में से किसी को पृथ्वी में बसता हुआ न रख और फिर उमर को यह भी कहा कि तुम्हारा उदाहरण हज़रत मूसा जैसा है जिन्होंने फरमाया था कि

رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓی اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰی قُلُوْبِهِمْ فَلَا یُؤْمِنُوْا حَتّٰی یَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِیْمَ

(यूनुस 89) कि ऐ हमारे रब उनके अमवाल बर्बाद कर और उनके दिलों पर सख्ती कर अत: वे ईमान नहीं लाएंगे यहाँ तक कि एक दर्दनाक अज़ाब देख लें। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि चूंकि तुम ज़रूरतमंद हो इसलिए कैदियों में से प्रत्येक कैदी या तो फिद्या देगा या फिर उसकी गर्दन उड़ा दी जाएगी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रा कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया हे रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस आदेश के अनुपालन से सहल बिन बैज़ाय को छूट दी जाए क्योंकि मैंने उन्हें इस्लाम का भलाई के साथ चर्चा करते हुए सुना है। यह सुनकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चुप रहे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन

मसूद कहते हैं कि इस दिन जितना मुझे अपने ऊपर आकाश से पत्थरों के बरसने का डर लगा इतना मुझे कभी नहीं लगा। अंत में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया ही दिया कि इस को अपवाद माना जाता है।

(उद्धरित चार अब्दुल्लाह अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद फयाज़ चिश्ती पृष्ठ 34-36 शाकिर पब्लीकेशनज़ उर्दू बाज़ार लाहौर 2017 ई)

आं हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चुप रहना उन्होंने अपने लिए आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नाराज़गी समझी और इसलिए अल्लाह तआला के डर से और अल्लाह तआला की सज़ा के डर से उनकी हालत ख़राब हो गई। अल्लाह तआला से भय का उन का अजीब मुकाम था। सुन्नते रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुसार इब्ने मसूद केवल जुम्मेरात के दिन उपदेश किया करते थे जो बहुत ही कम और व्यापक होता था और उनका बयान ऐसा दिलचस्प और मीठास वाला होता था कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मिरदास बताते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह जब भाषण समाप्त करते थे तो हमारी इच्छा होती थी कि काश अब वह कुछ और बताते। शाम के समय उपदेश में आमतौर आप नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों में से केवल एक हदीस सुनाया करते थे और हदीस बयान करते समय आप का और शौक और इश्के इलाही देखने योग्य होता था। अपने शिष्य मसरूक कहते हैं कि एक दिन आप ने हमें नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक हदीस सुनाई और जब इन शब्दों पर पहुंचे कि سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ ... कि मैंने अल्लाह के रसूल से सुना तो मारे डर और भय के उन के बदन पर एक कपकपी छा गई। यहां तक कि आप के कपड़ों से भी एक थरथराहट महसूस होने लगी। इसके बाद सावधानी के लिए यह भी कहा कि शायद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह शब्द फरमाए थे या इससे मिलते जुलते शब्द। जब आप हदीस का वर्णन करते हैं, तो आप बहुत सावधान रहते थे। यह इस चेतावनी और पकड़ की वजह से होता है जिसके बारे में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि ग़लत हदीसों को बयान करने वालों की पकड़ होगी।

एक और रिवायत से भी इस सावधानी का अनुमान पता लगता है। अम्रो बिन मैमून बताते हैं कि मैं एक साल तक हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद के पास आता जाता रहा। वे हदीस वर्णन करने में बहुत सावधानी से काम लिया करते थे। एक बार मैंने देखा कि قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صلی اللہ علیہ وسلم यानी अल्लाह तआला के रसूल ने फरमाया शब्द कहकर आप पर एक अजीब पीड़ा की स्थिति छा गई और माथे से पसीना गिरने लगा तो फरमाने लगे कि इसी प्रकार के शब्द और इस से मिलते जुलते शब्द हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाए थे।

(सीरत सहाबा रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हाफिज़ मुज़फ्फर अहमद पृष्ठ 283-284 नज़ारत प्रकाशन रबवा 2009 ई)

आप के ख़ुदा से भय का यह अवस्था थी कि फरमाया करते थे कि मैं चाहता हूं कि मरने के बाद उठाया जाऊं और हिसाब किताब से बच जाऊं।

हज़रत अब्दुल्लाह बताते हैं कि एक बार हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद बीमार हुए तो सख्त भयभीत हो गए। हमने पूछा कि आप को कभी किसी रोग से इतना परेशान नहीं देखा जितना इसमें हैं। ऐसा कहा जाता है कि यह बीमारी अचानक मेरे पास आई है। मैं अभी ख़ुद को अख़रत के सफर के लिए तैयार नहीं पाता इसलिए परेशान हूँ। आप ने अपनी मौत का ज़िक्र करते हुए कहा कि वह दिन मेरे लिए आसान नहीं है होगा। मैं चाहता हूं कि जब मैं मर जाऊं तो उठाया न जाऊं। इब्न मसूद से मरवी है कि आप ने यह वसीयत की और इस वसीयत में बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम लिखा।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद जल्द 3 पृष्ठ 117 अब्दुल्लाह बिन मसूददारुल कुतूब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

अब बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम आजकल प्रत्येक लिखता है तो यह विशेष रूप से जो उसका यहाँ ज़िक्र हुआ क्योंकि उनको हकीकी एहसास था, अल्लाह तआला के रहमान और रहीम होने का एहसास था इसलिए अल्लाह तआला की विशेषताओं का वास्ता देकर यह बात शुरू की अल्लाह तआला के नाम से शुरू की ताकि इस वसीयत में कोई ऐसी बात हो जो अल्लाह तआला की पकड़ में आ सकती हो तो रहमान और रहीम ख़ुदा इस से बचाए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद के वित्तीय स्थिति ख़ुदा तआला की कृपा से इतने अच्छे हो गए थे कि अंतिम उम्र में आपने अपना वज़ीफा लेना छोड़ दिया था।

(असदुल ग़ाबा फी मअफितिल सहाबा जिल्द 3, सफ़ा 387 दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई) इस कफन के बार में यही वसीयत की कि वह सादा चादरों का हो। और दो सौ दरहमों का हो और वफात के बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन मज़ऊन की कब्र के साथ दफन किया जाए जैसा कि पहले भी उल्लेख हो चुका है हज़रत उसमान ने आप की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई और आप की तदफीन जन्नतुल बक़ी में हुई। आप को रात को दफनाया गया। एक रिवायत यह भी है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद के दफन करने के बाद सुबह उसकी कब्र पर से एक रावी गुज़रे तो देखा कि उस पर पानी छिड़का हुआ था।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद जल्द 3 पृष्ठ 118 अब्दुल्लाह बिन मसूददारुल कुतूब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

आस्था का यह हाल था कि लोगों ने रात को ही कब्र की मज़बूती के लिए पानी छिड़का होगा।

अबू अलहवास बताते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद की मौत के बाद हज़रत अबू मूसा और हज़रत अबु मसूद के पास हाज़िर हुआ। इन दोनों में से एक ने अपने साथी से कहा कि क्या इब्ने मसूद ने अपने बाद कोई अपने जैसा छोड़ा है, उनके जैसा कोई और है? तो उन्होंने कहा कि ऐसा हमारे जाने के बाद तो शायद संभव हो, इस समय हमें ऐसा कोई दिखाई नहीं देता। अब हमारे बीच इस समय कोई नहीं, शायद बाद में कोई पैदा हो जाए।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 119 अब्दुल्लाह बिन मसूद दारुल कुतूब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

हज़रत तमीम बन हराम बताते हैं कि में आं हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कई सहाबी की मज्लिसों में बैठा हूँ मगर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद से अधिक दुनिया से बे रग़बत और अख़रत को चाहने वाला किसी और को नहीं पाया।

(अल्असाबा फी तमीज़ सहाबा जिल्द 4 पृष्ठ 201 अब्दुल्लाह बिन मसूद दारुल कुतूब इल्मिया बैरूत 1995 ई)

दूसरे जिन सहाबी का आज में चर्चा करूंगा उनका नाम हज़रत कदामह बिन मज़ऊन है। हज़रत कदामह बिन मज़ऊन हज़रत उसमान बिन मज़ऊन के भाई हैं और हज़रत उमर की बहन हज़रत सफिया की आप से शादी हुई थी।

(अल्असाबा फी तमीज़ सहाबा जिल्द 5 पृष्ठ 322-323 कदामह बिन मज़ऊन दारुल कुतूब इल्मिया बैरूत 1995 ई)

हज़रत कदामह बिन मज़ऊन के एक से अधिक विवाह थे । एक पत्नी हिन्द बिन्त वालीद थीं जिनसे उम्र और फातिमा जन्मे। एक पत्नी फ़ातिमा बिन्ते अबू सुफयान थीं जिनसे आपकी बेटी आयशा पैदा हुईं। इसी तरह उम्मे वल्द के गर्भ से हफ्साह और हज़रत सफिया बिन ख़त्ताब के गर्भ से हज़रत रमल्ला पैदा हुईं।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 306 कदाम बिन मज़ऊन दारुल कुतूब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

इस्लाम को स्वीकार करते समय इन की उम्र उन्नीस साल की थी, मानो ठीक जवानी में ही उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया और मदीना हिजरत के समय आप का पूरा परिवार मक्का में अपने मकानों को बिल्कुल ख़ाली छोड़कर मदीना चला गया। मदीना में हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलमा अजलानी ने इस परिवार को अपना अतिथि बनाया। आं हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब मक्का से हिजरत करके मदीना आए तो आप हज़रत कदामह और उनके भाइयों को स्थायी निवास के लिए ज़मीन के भाग प्रदान किए।

(सत्तर सितारे तालिब हाश्मी पृष्ठ 66-67 अल्बदर पब्लिकेशन लाहौर)

हज़रत कदामह प्रारंभिक ईमान लाने वालों में से थे। दोनों हिजरतों यानी हिजरत हब्शा और हिजरत मदीना में शामिल हुए। उन्हें जंग बद्र और जंग उहद सहित सभी जंगों में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली।

(अल्असाबा फी तमीज़ सहाबा जिल्द 5 पृष्ठ 322 कदामह बन मज़ऊन दूरुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1995), (अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 306 कदामा बिन मज़ऊन दारुल कुतूब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

जब हज़रत उसमान बन मज़ऊन की मृत्यु हुई तो आप ने अपने पीछे एक बेटी छोड़ी जिसके संबंधित आप ने अपने भाई हज़रत कदामह को ताकीदी नसीहत फ़रमाई। इसके बारे में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बताते हैं कि हज़रत उसमान बिन मज़ऊन और हज़रत कदामह दोनों मेरे मामू थे। अत: मैं हज़रत कदामह के पास गया और उनसे अनुरोध किया कि हज़रत उसमान बिन मज़ऊन की बेटी का निकाह मुझ से करें तो आप ने मुझ से बात पक्की कर दी, रिश्ता हो गया। मुग़ीरह बन मालिक इस लड़की की मां के पास गए और उन्हें वित्तीय लालच दी और

लड़की की राय भी अपनी मां के पक्ष में थी, एक और रिश्ता आया और लड़की माँ और लड़की की इच्छा या रिश्ता करने का विचार दूसरी ओर था। यह मामला आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सेवा में पहुंचा। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत कदामह को बुला भेजा और इस रिश्ते के बारे में उनसे पूछा तो उन्होंने कहा कि हे रसूलल्लाह! यह मेरे भाई की बेटी है। उसके लिए संबंध चुनने में कोई कोताही नहीं करूंगा। मेरे भाई की बेटी है और वह मर गया है, मैं इस रिश्ते के लिए जो अच्छा होगा वही करूँगा तो मैंने तो पहले हां कर दी है उसे बेहतर समझ कर की है। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि यह अनाथ बच्ची है उसकी शादी उसकी मर्जी से होगी। उसका पिता नहीं है, ठीक है तुम ने अच्छा समझ कर किया होगा लेकिन इस बच्ची की इच्छा भी पूछो। दोनों रिश्तों में से जहाँ बच्ची कहेगी वहाँ शादी होगी। अत: आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसके बाद यह फैसला किया। यह ब्यान करने वाले जिन्होंने पहले संदेश भेजा था, रिश्तेदार थे, भांजे थे बताते हैं कि मेरे बजाय उसका निकाह मुग़ीर से कर दिया, (अल्असाबा फी तमीज़ सहाबा जिल्द 5 पृष्ठ 323 कदामह बिन मज़ऊन दीरुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत 1995) दूसरा रिश्ता जो पसंद था उसके माँ और लड़की को उससे रिश्ता हो गया। तो यह महिला की राय की स्वतंत्रता थी जिसे आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्थापित किया और जो अनाथ है इसका विशेष रूप से ध्यान रखने को कहा कि पिता का साया उस पर नहीं है तो दुरुपयोग न हो जाए इसलिए लड़की की इच्छा को बहरहाल देखा जाना चाहिए।

हज़रत कदामह ने 36 हिजरी में 68 साल की उम्र में वफात पाई।

(असदुल ग़ाब फी मअरफत तिस्सहाबा जिल्द 4 पृष्ठ 376 कदामा बिन मज़ऊन, दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत)

अल्लाह तआला यह धर्म की समझ और आज्ञाकारिता वफ़ा और वास्तविक इश्क के नमूने और उच्च गुणवत्ता वाले इन सहाबा के नक्शेकदम पर चलते हुए हमें भी प्राप्त करने, अपनाने और पालन करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे और हर प्रकार के फ़ितनों का हिस्सा बनने से हमें हमेशा बचाए।

नमाज़ के बाद दो जनाज़ा गायब भी पढ़ाऊंगा। पहला आदरणीया अमतुल हफीज़ भट्टी साहिबा पत्नी महमूद भट्टी साहिब कराची का है। यह बड़ा लंबा समय सदर लजना ज़िला कराची रही हैं। 27 सितम्बर को 93 साल की उम्र में उनकी मृत्यु हुई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। उनके पिता का नाम डॉ ग़ुलाम अली था और उनके पिता हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा में शामिल थे। अपने पिता सेना में डॉक्टर होने की वजह से अक्सर विभिन्न शहरों में रहते थे, तबादले होते रहते थे। जहां भी रहते धार्मिक माहौल बना लेते। यह भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा का एक अजीब तरीका था। धार्मिक माहौल बना लेते थे और कुछ महीनों तक प्रचार के बाद आपके अधीन लोग अहमदी बन जाते और फिर एक जमाअत की स्थापना करने के बाद अपने घर को ही तब्लीग़ी सेन्टर बना लेते थे। और इस तरह उन्होंने कई जमाअतों की स्थापना की। उन की इच्छा थी कि उन का परिवार कादियान के धार्मिक माहौल में रहे, इसलिए उन्होंने अपने परिवार को कदियान में रखा। डॉ अमतुमल हफीज़ साहिबा की माता ने भी अपनी सारी उमर जमाअत के लिए वकफ कर रखी थी। 1936 ई से कादियान के धार्मिक वातावरण में रहें। अमतुल हफीज़ भट्टी साहिबा ने कादियान में मैट्रिक के बाद दीनयात कक्षा में दर्जा राबिया तक शिक्षा पाई। इस अवधि के दौरान, यह भी सौभाग्य प्राप्त हुआ कि हज़रत मुस्लेह मौऊद के दर्स कुरान में नियमित शामिल होती रहीं। जब से होश संभाला जमाअत की सेवा की तौफीक़ प्राप्त हुई। उनकी शादी उन के ख़ाला के बेटे महमूद भट्टी साहिब से हुई थी और इस रिश्ते की भी एक जबरदस्त घटना है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने लिखा है कि मैंने कशफ़ में देखा कि कैसे लड़की की मां ने एक पत्र मुझे भेजा है लड़की के हाथ और एक रिश्ते के बारे में पूछा है और उसका नाम बताया है। अत: थोड़ी देर के बाद ही वह लड़की आई, पत्र आया और वे सारी बातें उसी तरह हुई तो हज़रत मुस्लेह मौऊद ने इस रिश्ते को भी स्वीकार किया कि यह नजारा पूरा मैं कशफ़ा में अभी थोड़ी देर पहले देख चुका हूँ और थोड़ी देर बाद ठीक इसी तरह हुआ जिस तरह हज़रत मुस्लेह मौऊद ने देखा था । 1948 ई में शादी के बाद कराची में रहने के साथ ही उनकी सेवाएं लजना इमाउल्लाह कराची में शुरू हुईं। इसके साथ ही, उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी, और बाद में उन्हें प्रथम श्रेणी के साथ 1972 ई में सिंध विश्वविद्यालय से अरबी की डिग्री हासिल की। 1975 ई में अमतुल हफीज़ साहिबा के पति अफ्रीका नौकरी के लिए गए। बीच बीच में अफ्रीका जाते रहे। लाइबेरिया तथा पश्चिम अफ्रीका में नेशनल सदर के तौर पर काम किया। फिर युद्ध के कारण देश छोड़ना पड़ा तथा वापस कराची आना पड़ा। तहरीक जदीद के पांच हज़ारी मुजाहेदीन में शामिल थीं। 1991 ई में नायब सदर और शिक्षा जिला सचिव का चयन किया गया था और पन्द्रह वर्ष की सेवाओं पर जो ख़िलाफत जोबली के उत्सव में जो प्रमाण पत्र दिए गए आप को भी प्रमाण पत्र मिला। 1997 ई से मई 2018 ई तक, सदर लजना ज़िला कराची की तौफीक पाई और और इस अवसर पर कराची जो बहुत बड़ा शहर है इस में उन्होंने दौरे किए कई इज्तिमा किए और विभागों की मीटिंग कीं। इसे प्रबंधकीय तरीके से मज़बूत किया और लगभग 1948 से लेकर 2018 सत्तर वर्षों तक उन की सेवाओं का समय है।

अमतुन्नूर नासिर साहिबा जो वर्तमान में ज़िला कराची की सदर लजना हैं कहती हैं कि उन्होंने सत्तर वर्षों में भरपूर सेवा की है। दिल की बहुत नर्म थीं। मुस्कुराते हुए चेहरों के साथ दूसरों के साथ व्यवहार करना, धीमे अंदाज़ में बात को समझाना यह आपकी प्रकृति का एक हिस्सा था। वक्त की पाबन्दी आप का नियम था। जो काम ज़िम्में लेती उसे शीघ्र ही डायरी में नोट कर लेतीं इस विचार से के भूल न जाओं। फिर काम होने पर संबंधित विभाग को त्वरित फोन करके बतातीं। केंद्र से जो निर्देश या संदेश आता कोशिश होती कि तभी संबंधित विभागों को बता दें और कार्यालय खुलने का इंतजार न करें और हमेशा निष्ठा के साथ उन्होंने अपने काम को भी निभाया और ख़िलाफत से भी पूर्ण वफादारी और आज्ञाकारिता नमूना दिखाया।

अमतुल बारी नासिर साहिबा ने भी उन के साथ काम किया। उन्होंने भी यही लिखा है कि बहुत मुहब्बत से काम लेते थीं। उनके जमाने में कराची से पचास किताबें प्रकाशन हुईं और फारसी किताबें जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के फारसी कलाम का मजमूआ है वह भी कराची की लजना को उनकी अध्यक्षता में ही प्रकाशित करने का अवसर मिला। बहुत धैर्य वाली थीं और अमतुल बारी साहिबा कहती हैं कि मुझे लगता है कि उनकी सबसे बड़ी ख़ूबी उनका धैर्य और सबर था। बहुत अधिक मामलों को समझने वाली थीं विशेष से पारिवारिक झगड़ों को हल करने में दोनों तरफ की बात सुन कर अच्छी नसीहत करतीं और भी कोशिश करतीं कि मामले सुलझ जाएं और यही आज कल के समस्याएं हैं हमारी जमाअत में भी। पारिवारिक झगड़े बहुत अधिक हो गए हैं, अल्लाह तआला दोंनों पक्षों को अक्ल दे के आपस में सुलझा लिया करें और अधिकारियों को भी समझ दे कि उन्हें हल करने में अपनी वास्तविक भूमिका अदा करने वाले हों।

उनकी बहू लिखती है कि हम बहुओं को बेटियों की तरह रखा था और हम आपसे अपनी समस्याओं को बिना झिझक सुना लिया करती थीं। इसी प्रकार वहां लज्ना की सैक्रेटरी भी लिख रही हैं कि दफतर चलाते समय बिल्कुल एक बराबरी के साथ हमारे काम करतीं और हमें बहुत मार्गदर्शन करती। उसकी बहू लिखती हैं कि कुरआन को पढ़ाने की तरफ भी एक विशेष ध्यान दिया था। अपने पोते-बच्चों को कुरआन पढ़ाया धार्मिक शिक्षा सुसजित किया। कर्मचारियों से, ग़रीबों से भी प्यार करती थीं, बल्कि उन के मरने के बाद उन के घर वालों का भी ध्यान रखतीं और हमेशा उन के हक अदा करने की कोशिश करतीं। अल्लाह तआला उन से क्षमा तथा

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

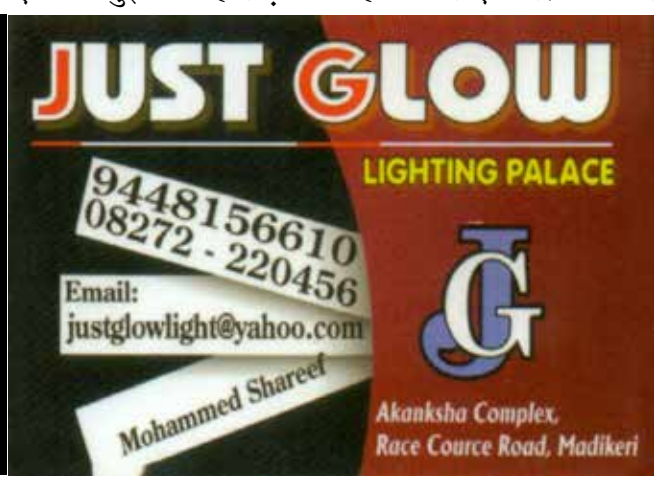

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

माफी का व्यवहार करे और उन की औलाद को भी उनके नक्शे कदम पर चलने की तौफीक़ प्रदान करे।

दूसरा नमाज़ जनाज़ा अदनान वेंडेब्रोकेक साहिब का है, जो बेल्जियम के विदेश सैक्रटरी थे। 29 सितम्बर को वफात हो गई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। उनके पिता रिज़वान वेंडन ब्रोक साहिब बेल्जियम जमाअत के पहले बेलज़ अहमदी थे जिन्होंने साठ के दशक में बैअत की थी। अदनान साहिब ने अपने पिता की वजह से अहमदियत स्वीकार नहीं बल्कि अनुसंधान किया और उन्होंने कहा में अनुसंधान करना चाहता हूँ और अनुसंधान के बाद 1994 ई में बैअत की और अहमदी होने के बाद अदनान साहिब बहुत सक्रिय हो गए थे, प्रचार के मैदान में भी विशेष रूप से बहुत आगे थे। 1998 ई में, एक बार बेल्जियम में तब्लीग़ी मज्लिस हुई तो हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे ने उन का उल्लेख करते हुए, मेरे पास ऐसा ट्रांसलेटर है जो अंग्रेज़ी से फ्रेंच में भी अनुवाद कर सकता है और डच में भी अनुवाद कर सकता है और अल्लाह तआला की कृपा से उस समय ऐसी मज्लिस में यह काफी मददगार होते थे। डॉ इदरीस साहिब बेल्जियम के अमीर जमाअत लिखते हैं, कि उन को कैंसर हो गया था और अल्लाह तआला की कृपा से फिर इस में सुधार होना शुरू हुआ। फिर से उन्होंने मिशन हाउस में आना शुरू कर दिया और हमेशा यह कहते थे कि अल्लाह तआला की कृपा ठीक हुआ हूं जिस के कारण में बेहतर हुआ हूं क्योंकि इस बीमारी के लगभग सभी रोगियों की मृत्यु हो गई।

जो बेल्जियम की जनसंपर्क की थी इस के शुरू से ही सदस्य थे। बाद में 2016 ई में मैंने उन्हें विदेश मामलों के सचिव के रूप में नियुक्त किया और बहुत सक्रिय होकर यह काम करते रहे। अमीर साहिब लिखते हैं कि बीमार होने के बावजूद मेरे साथ सरकारी दफतरों में जाया करते थे और अमूरे ख़ारजा के हवाले से जो खत लिखे जाते थे उस बावजूद बीमारी के हस्पताल से भी किया करते थे। अन्तिम समय में भी डच अनुवाद टीम के प्रभारी थी। बड़ी मेहनत से उन्होंने कुछ पुस्तकों के अनुवाद भी किए, ख़ुत्बों के डच अनुवाद का भी फाइनल रिव्यू किया करते थे उसी तरह सभी प्रेस रिलीज़ज डच के अनुवाद का भी रिव्यू किया करते थे। और फिर यह लिखते हैं कि मेरे विभिन्न यात्राओं के दौरान अदनान साहिब इस बात को व्यक्त किया करते थे कि यह बीमारी मेरे लिए दया साबित हुई है क्योंकि इस दौरान मुझे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की पुस्तकों और जमाअत के साहित्य को पढ़ने की तौफ़ीक़ मिली है और ख़ुदा तआला की हस्ती पर ईमान लाने में मेरा विश्वास बहुत अधिक हुआ है। बीमारी में भी अल्लाह तआला की खुशी से प्रसन्न था। अंतिम दिनों में अपने बड़े भाई को हिदायत देते रहे कि तुम दुनियादारी कम करो और जमाअत को अधिक समय दिया करो और अमीर साहिब कहते हैं मुझे भी कहते थे कि मेरा भाई उमूरे ख़ारिजा में बहुत उपयोगी हो सकता है इस संबंध में इससे सेवाएं लिया करें। उनकी मां बताती हैं कि उनके परिवार में अहमदियत अदनान साहिब के पिता की वजह से आई जो सात साल इराक में रहे जहां उन्हें कुरआन पढ़ने का मौका मिला और वहीं उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया। जब वह हॉलैंड आए, तो उनकी मुलाकात इमाम बशीर साहिब के साथ हुई थी और इस तब्लीग़ के नतीजे में आप अहमदियत में शामिल हो गए।

एक बार बेल्जियम में, जब हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला से उन की मुलाकात हुई तो उन्होंने कहा कि मेरे लिए दुआ करें कि अल्लाह तआला मुझे हमेशा साबित कदम रखे। अदनान साहबि की मां का कहना है कि उनके पिता को सांसारिक चीजों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह कहती है कि मेरा बेटे अदनान भी पिता के कदमों पर चलने वाला था। नमाज़ का पाबन्द, जमाअत की सेवाकरने वाले, ख़िलाफत से वफा का संबंध रखने वाला और हर शुक्रवार को ख़ुत्बा जम्अ: ख़ुद सुनने वाला और यहां तक कि अपने बच्चों को भी सुनवाता था। आप हर समय जमाअत की सेवा करने के लिए तैयार रहते। ख़िलाफत से उन का गहरा कनेक्शन था।

अल्लाह तआला न के स्तर बुलन्द करे दया और रहम का व्यवहार करे और जमाअत को इस प्रकार के जान फिदा करने वाले प्रदान करता चला जाए। उनके पीछे रहने वालों में उनकी पत्नी के अलावा एक बेटा और बेटी हैं। अल्लाह तआला उन्हें भी धर्म पर कायम रखे और ईमान में मज़बूती दे और अपने पिता के नक्शेकदम पर चलने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

वह क़ुर्आन और सुन्नत के विपरीत और ऐसी हदीसों का विरोधी है जो क़ुर्आन के अनुकूल हैं। अत: हदीसों के महत्त्व को समझो और उन से लाभ उठाओ कि वे आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर सम्बद्ध हैं, जब तक क़ुर्आन और सुन्नत को झुठलाए, तुम भी उनको न झुठलाओ। बल्कि तुम्हें चाहिए कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों का इस प्रकार अनुसरण करो कि तुम्हारी किसी भी हरकत और किसी भी सुकून, तुम्हारे किसी भी कर्म या उसके परित्याग के पीछे उसके समर्थन में तुम्हारे पास कोई हदीस हो। यदि कोई ऐसी हदीस हो जो क़ुर्आन शरीफ़ की उल्लिखित घटनाओं के पूर्णतया भिन्न है तो उसकी अनुकूलता हेतु चिन्तन करो। संभव है उस भिन्नता में तुम्हारे समझने का ही दोष हो और यदि किसी प्रकार भी यह भिन्नता दूर न हो तो ऐसी हदीसों को फेंक दो कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर से नहीं है। यदि कोई हदीस कमज़ोर है परन्तु क़ुर्आन के अनुकूल है तो उसे स्वीकार कर लो क्योंकि क़ुर्आन उसकी पुष्टि करता है। यदि कोई हदीस ऐसी है जिसमें किसी भविष्यवाणी की सूचना है। परन्तु हदीस के विद्वानों के निकट वह कमज़ोर है, और तुम्हारे काल में या इस से पूर्व उस हदीस की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई है तो उस हदीस को सत्य समझो और ऐसे हदीस के विद्वानों और हदीस को बयान करने वालों को दोषी और झूठा समझो, जिन्होंने इस हदीस को कमज़ोर और बनावटी घोषित किया हो।

★**हाशिया :-** अहले हदीस रसूल का कार्य और कथन दोनों का नाम हदीस ही रखते हैं। हमें उनके नामकरण से कोई मतलब नहीं। वास्तव में सुन्नत अलग है जिसके प्रचार का कार्य हज़रत मुहम्मद साहिब ने स्वयं किया और हदीस अलग है जो बाद में एकत्र हुई। इसी से।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 55 से 57)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

पृष्ठ 2 का शेष

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में इस बारे में कोई कानून नहीं बना था इसी तरह जहां तक धर्म परिवर्तन की बात है तो कुरआन करीम ने बहुत स्पष्ट शब्दों में वर्णन किया है धर्म धारण करने में प्रत्येक आदमी आज़ाद है चाहे वे इस्लाम को छोड़ दे या धारण करे यह उस की अपनी इच्छा है तो अब जो भी चरमपंथी कर रहे हैं, उनका इस्लामी शिक्षाओं से कोई संबंध नहीं है। एक निर्दोष को मारना इस्लाम की शिक्षाओं के ख़िलाफ है। मैंने पहले बताया था कि जो इस तरह काम करते हैं उन्हें लालच दी जाती है कि ऐसे लोग जन्नत में जाएंगे। लेकिन इस्लाम तो कहता है कि यदि तुम एक निर्दोष को कत्ल करोगे तो तुम जन्नत में नहीं जाओगे बल्कि नरक में जाओगे।

महोदया ने सवाल किया कि आपके निकट इस का क्या कारण है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया इस का कारण धर्म नहीं है। इस का कारण उनके निजी हित हैं। मध्य पूर्व के लोगों के उनकी सरकारों के साथ समस्याएं हैं, जिनकी प्रतिक्रिया में एक विद्रोही गुट बन जाता है, और उन विद्रोहियों के चरमपंथी समूह बन जाते हैं। फिर लोग राजनीतिक हितों के लिए धर्म का उपयोग करते हैं।

महोदया ने पूछा की आप सारांश में अपने स्वीडिश दौरे का वर्णन कैसे करेंगे?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : मैं कहूंगा कि मुझे स्वीडन में बहुत मज़ा आया। हमने माल्मो में हमारी स्वीडिश दूसरी मस्जिद का उद्घाटन किया। फिर स्टॉक होम गया जहां कुछ पढ़े लिखे और राज नेताओं से मिला। और अब यहाँ गोथनबर्ग में आया हूं। यहां स्वीडन में मैंने प्राकृतिक दृश्यों की सैर तो नहीं की लेकिन अपने निवास के दौरान बहुत से लोगों से मुलाकातें हुईं जो बहुत अच्छी रहीं। इनट्रवियू के अंत में, महोदया ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का धन्यवाद किया।

इनट्रवियू के बाद तीन बज कर चालीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने आवासीय भाग में गए।

राष्ट्रीय मज्लिस आमला लजना स्वीडन की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार छह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ मीटिंग हाल में आए और राष्ट्रीय मज्लिस लजना स्वीडन की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात शुरू हुई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने दुआ करवाई। बाद में हुज़ूर अनवर के पूछने पर जनरल सैक्रेटरी साहिबा ने कहा कि हमारी नौ मज्लिसें हैं और सभी मज्लिसें रिपोर्टें भिजवाती हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया,अच्छा बहु सक्रिय हैं।

हुज़ूर अनवर ने पूछा कि क्या उन मज्लिसों को उनकी रिपोर्टों का जवाब दिया जाता है उस पर जनरल सैक्रेटरी साहिबा ने अर्ज़ किया कि नेशनल सैकर्टर्यान सदर लजना साहिबा से बात कर के जवाब देती हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया , सदर साहबिा ख़ुद भी अपनी लजना से सीधा सम्पर्क रखा करें।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने सैक्रेटरी तरबियत से पूछा की कि तरबियत का क्या प्रोग्राम बनाया है नवम्बर से अब तक छह महीने बीत चुके हैं। आपने क्या हासिल किया है।

इस पर सैक्रेटरी तरबियत ने कहा कि इस तिमाही में तुलनात्मक समीक्षा में तरक्की हुई है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: लज्ना की कितनी संख्या है? क्या आपने समीक्षा की है कि कितनी लजना नमाज़ें पढ़ती हैं, कुरआन शरीफ की तिलावत करती हैं और ख़ुत्बा सुनती हैं। सैक्रेटरी तरबियत ने कहा कि तरबियत के मामलों को पहचान कर उन को तरबियत कमेटी के इज्लास में डिस्कस करते हैं के इस पर किस प्रकार कार्यान्वित किया जाए। सैक्रेट्रीयान तरबियत हर महीने अपनी समस्याओं को बताती हैं कि इन का किस प्रकार हल किया जाए ।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर सैक्रेटरी तरबियत ने कहा कि 15 से 25 साल तक की उम्र की 66 लजना हैं और 25 वर्षों से ऊपर लजना की संख्या 277 है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि सैक्रेटरी तजनीद का काम है कि श्रेणी बनाए । 15 से 25 साल, 25 से 30 साल और 40 से ऊपर कितनी हैं? 40 साल से ऊपर कम हैं जो यहां के हिसाब से शिक्षित हैं।

ख़ुत्बा के हवाले से सैक्रेटरी तरबियत ने कहा कि लजना अपने मोबाइल पर सुनती हैं और फिर बाद में वापस बताती हैं कि हमने सुना लिया है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया अलफज़ल में ख़ुत्बा के सवाल तथा जवाब आते हैं आप भी इसी तरह बनाएं या वहां से लेकर स्वीडिश भाषा में इस का अनुवाद कर के सब को दें। अमुक हदीस किस बारे में थी इस का जवाब यह है वे पढ़ लें ताकि याद करें पूछा करें कि सुन लिया है या नहीं। हुज़ूर अनवर ने सैक्रेटरी तरबियत से पूछा कि आप को विश्वास है कि ख़ुत्बा सुनने की सहीह रिपोर्ट देती हैं। इस पर सैक्रेटरी तरबियत ने बताया कि हम उन्हें पूरा एक सप्ताह देती हैं। ताकि सुन कर याद कर लें तो बता दें। कुछ सदस्य रविवार को शाम को जवाब देती हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि तरबियत के लिए आपने कौन सी पुस्तक या किताब का हिस्सा निकाल कर दिया हुआ है। इस पर सैक्रेटरी तरबियत ने बताया के "ओढ़नी वालियों के लिए फूल" किताब और रस्मों के ख़िलाफ हज़रत छोटी आपा जान की किताब दी हुई है।

हुज़ूर अनवर ने आमला के सदस्यों से हाथ खड़े करवा कर पूछा के आप बताएं कि कितनी सदस्या ख़ुत्बा सुनती हैं। इस पर सारे सदस्यों ने हाथ खड़े किए।

सैक्रेटरी नासरात ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर फरमाया कि नासरात की संख्या 51 है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: तरबियत का स्लेबस क्या हैं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : आप लजना को लक्ष्य दें "अल्हयाओ मिनल ईमान" अर्थात लज्जा ईमान का अंग है। और नासरात को भी लक्ष्य दें।

सैक्रेटरी नासरात ने कहा कि स्वीडन में नासरात के चन्दा देने की संख्या बहुत कम है। इजलास में तो आती हैं लेकिन चन्दा नहीं देती हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: " ध्यान दिलाएं, सम्पर्क करें माताओं से सम्पर्क करें अगर माता का सम्पर्क होगा तो नासरात का होगा। यह तो नहीं हो सकता कि 91 प्रतिशत ख़ुत्बा सुनती है और संबंध नहीं है। यह नौ प्रतिशत का नहीं हो सकता है। तो कार्यक्रम बनाएं। महीने में एक दो बार कार्यक्रम बनाएं। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि नासिरात के सभी मामले नासरात की सैक्रेटरी का काम हैं। नासरात का आमला बनाएं।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर सैक्रेटरी नासरात ने कहा कि बच्चों का बर्गर 35 क्रोनज़ का आता है। हुज़ूर अनवर ने फरमाया यदि 35 क्रोनज़ का आता है, तो महीने में बर्गर का तीसरा भी नहीं दे सकतीं?

आप नासरात से सीधे सम्पर्क रखें यह सारी ज़िम्मेदारी आप की है। यह आपकी ज़िम्मेदारी है।

तरबियत के हवाले से नासरात की सैक्रेटरी ने कहा कि नया स्लेबस बनाए जा रहे हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: आपका साल अक्टूबर में शुरू नहीं होता। इस पर बताया गया कि साल इज्तिमा के बाद मई में शुरू होता है। उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि सारी दुनिया में एक ही सिद्धांत चलेगा। अक्टूबर से लेकर सितंबर तक और इज्तिमा जब मर्ज़ी करें। यदि नई सदर हो तो अक्तूबर से काम करेगी। इस तरह से अनियमितता पैदा होती है। दस्तूर असासी का पालन करें। लजना का आमला का और वित्तीय वर्ष अक्टूबर से सितंबर तक है। सितंबर, अक्टूबर में एक केंद्रीय स्थान पर अपने इज्तिमा रख लिया करें और सदर का चयन कर लिया करें। जिस साल नहीं होता उस वर्ष करने की आवश्यकता नहीं है। दो साल बाद, अपनी शूरा के इज्लास में अपने सदर का चयन किया करें। इस का इज्तिमा से कोई संबन्ध नहीं इज्तिमा जब चाहें करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: नासरात को भी कपड़ों के संदर्भ में बताएं। दस साल से ग्यारह साल तक की बच्चियों का ध्यान शर्म की तरफ करवाएं। यदि आप ग्यारह वर्ष की आयु से इस तरफ ध्यान दिलवाएंगे तो ध्यान पैदा होगा। एक स्कार्फ या लंबी शर्ट पहनें। 13 साल की उम्र में कुछ लड़कियों को स्कार्फ की ज़रूरत पड़ जाती है। पहले लज्जा पैदा करने की कोशिश करें। इसके लिए, बच्चों को कुरआन की विभिन्न आयतें , हदीसें और हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उद्धरण और ख़लीफाओं को उपदेशों को लेकर भेजती रहा करें। ख़ुद ही असर होता रहेगा। बड़े होकर तरबियत करने की कोशिश करते हैं तो असर नहीं होता। असली बात लज्जा का पैदा होना है। बाकी

सब अपने आप ठीक हो जाऐंगी।

सैक्रेटरी नासरात ने कहा कि हमारा एक मासिक रिपोर्ट फॉर्म होता है और एक रिपोर्ट फॉर्म त्रैमासिक है। हर तीन महीने बाद समीक्षा होती है। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि कितनी नासरात ख़ुत्बा सुनती हैं?

सैक्रेटरी नासरात ने बताया कि 50 प्रतिशत नासरात ख़ुत्बा सुनती हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने निर्देश दिया कि नासरात का विशेष रूप से ख़लीफा के साथ संबन्ध पैदा करें। इसके लिए विभिन्न कार्यक्रम बनाएं।

सैक्रेटरी सेहत जिस्मानी ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए कहा लजना व्यायाम करती है लेकिन कितनी संख्या में यह ज्ञान नहीं है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया पता करवा लें ।

सैक्रेटरी माल से हुज़ूर अनवर ने पूछा कि कमाई करने वाली कितनी महिलाएं हैं ? कितने प्रतिशत चन्दा देती हैं?

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि चन्दा देने वालों की संख्या बढ़ानी है तो इस के लिए कार्यक्रम बनाएं। व्यक्तिगत संबंध बनाएं और उन्हें बताएं कि पैसा टेक्स नहीं है, यह ख़ुदा तआला की ख़ुशी प्राप्त करने का माध्यम है।

सैक्रेटरी तब्लीग़ से हुज़ूर अनवर ने फरमाया, क्या तब्लीग़ कर रही हैं? क्या सीधे तब्लीग़ करती हैं? क्या पिछले 6 महीनों में कोई बैअत हुई है ?

इस पर सैक्रेटरी तब्लीग़ ने बताया कि हम तरबियती वर्कशाप और कक्षाएं लगाते हैं। इस के इलावा लज्ना के रिसर्च सैल बनाए हुए हैं। हर मज्लिस में हमारे पांच दायी इलल्लाह हैं जो हर महीने तब्लीग़ कर रही हैं। विभिन्न धर्मों के प्रतिभागी सेमिनार में भाग लेती हैं और इन समुदायों से उन का संपर्क है।

सैक्रेटरी तब्लीग़ में ने बताया कि लोलियो शहर में एक बैअत हुई है। इसके अलावा, दो अन्य बैअतें हैं, लेकिन अभी तक उन की मंजूरी नहीं मिली है। इस साल, हमने यह लक्ष्य रखा है कि कम से कम हर मज्लिस एक बैअत करवाए। यह पहले नहीं था। हम स्कूल और विश्वविद्यालयों में जा रहे हैं और सैमिनार कार्यक्रम भी कर रहे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: ठीक है करें। और यदि यहां विश्वविद्यालय वाली लज्ना अधिक हैं तो उन्हें संगठित कर के संगोष्ठियों आदि की क्यों व्यवस्था नहीं की जाती? जरूरी नहीं कि केवल इंटरफेथ ही हो। कोई भी सैमीनार हो जाए तो यह ठीक है।

सदर साहिब ने हुज़ूर से आज्ञा चाही कि क्या हम अहमदी लड़कियों की एसोसेयशन बना सकती हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, यदि 30 से 40 हैं तो फिर बनाएं। इस के बात सैक्रेटरी तब्लीग़ कहा कि आज कल ट्विटर द्वारा बहुत तब्लीग़ का तरीका हो गया है । हुज़ूर अनवर से मार्गदर्शन लेना था कि लजना ने अज्ञात खाते बनाए और लोगों को जवाब देती हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यदि आप व्यवस्थित तरीके से दे रही हैं, तो देती रहें। लेकिन ट्विटर या वाटस अप पर अपनी ख़ुद की फोटो लगाने अनुमति नहीं है। आप 5, 6 लड़कियों की टीम बना लें और वही जवाब दे। आपके ट्विटर खाते में सभी की पहुंच नहीं होनी चाहिए। जब बाकियों को तसल्ली हो तो अधिक बढ़ाया जा सकता है। यदि दूसरी लज्ना को कहीं पता चले तो वह अपने आप इस टीम को भेज दिया करें। प्रत्येक सहीह उत्तर दे भी नहीं सकती। बे तुक्के किस्म के जवाब मुशकिल में डाल देते हैं। कभी-कभी आप लोगों को पता नहीं लगेगा और मुरब्बी साहिब से पूछ कर जवाब देंने होंगे।

सैक्रेटरी तब्लीग़ ने अधिक मार्गदर्शन के लिए कहा कि Ja Seus Hijabi जो लज्ना कनाडा ने शुरू किया और यह सफल रहा, हम सोच रहे हैं कि हमें स्वीडन में शुरुआत करना चाहिए। 1 फरवरी को विश्व हिजाब दिवस मनाया जाएगा। मस्जिद के बजाय केंद्र में रखें।?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : ज़रूर मनाएं। अपने दोस्तों को बुलाएं। हर एक की कोई न कोई दोस्त होती हैं। प्रेस को भी बुलाएं। लोग मस्जिद से डरते हैं यदि मस्जिद नहीं है, तो केंद्र में रखें।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: व्यक्तिगत संबंध होने चाहिए। 18 साल से ऊपर के लोगों से संबंध होना चाहिए। लड़कियों से दोस्तियां होती हैं और उन्हें आमंत्रित करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने सैक्रेटरी इशाअत से फरमाया : जो चीज़ लें जो लज्ना के लिए ज़रूरी हैं उन का अनुवाद करवाएं। तरबियत के लिए ख़लीफाओं के तरबियती उद्धरण इकट्ठा कर के इन का स्वीडिश अनुवाद कर के प्रकाशित करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ से फरमाया कि नई बैअत करने वालियों से व्यक्तिगत सम्पर्क रखें। तरबियत के लिए छोटी मोटी चीज़ें देकर उन से बातचीत किया करें। उन के साथ मीटिंग रखा करें। उनसे बातें किया करें। कल एक औरत आई थी उस ने कहा कि मुझे यहां कोई स्वागत नहीं करता। इस पर सैक्रेटरी तब्लीग़ ने कहा कि वह बहन किसी को अपना पता नहीं देतीं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया इस का जिस से भी सम्पर्क है इसके द्वारा सम्पर्क भेज दिया करें। सबसे व्यक्तिगत संबंध बनाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने सैक्रेटरी की ख़िदमत को निर्देश देते हुए फरमाया कि औलड होमज़ जाया करें वहां जाकर बुज़ुर्ग महिलाओं की सेवा करें ताकि संपर्क और संबंध बढ़े।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सैक्रेटरी उद्योग और शिल्पकार ने बताया कि वह मीना बाज़ार लगाती हैं और 89000 क्रोनर तक आय हुई है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने सैक्रेटरी तजनीद को फरमाया कि आपके पास सभी का डेटा होना चाहिए। सैक्रेटरी ने कहा कि उनके पास डेटा तो है, लेकिन जब लोग घर या शहर बदलते हैं, तो उनसे संपर्क करना मुश्किल हो जाता है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : बताया तो यह गया था कि हर मज्लिस नियमित रिपोर्टें भेजती हैं अगर कोई महिला घर बदलती है और दूसरे शहर में जाती है, तो रिपोर्ट में इसका उल्लेख नहीं होने पर ऐसी रिपोर्ट का क्या फायदा है? आपको तो हर मज्लिस से अधिसूचना मिलनी चाहिए। यह आपके सिस्टम की कमजोरी है। जहां प्रणाली ठीक है, स्थानीय सदर तुरंत केंद्र को रिपोर्ट करती है कि हमारी अमुक मेंम्बर इस स्थान से कहीं चली गई हैं। अगर स्थानीय सदर सक्रिय हैं तो कोई समस्या नहीं है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : इसका मतलब यह है कि आपके व्यक्तिगत संपर्क और ग्रास स्तर पर कोई संपर्क नहीं है। उन्हें सक्रिय होने की जरूरत है। सदर साहिबा इन संपर्कों को सक्रिय करें।

सदर साहिब ने कहा कि इस समस्या को हल करने के लिए हम ने तीन नई मज्लिसें बनाई हैं ताकि सदरों को काम में आसानी हो। और नतीजतन व्यक्तिगत संपर्कों में बढ़ोहतरी हुई है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "ठीक है! व्यक्तिगत संपर्क बढ़ाएं। आमला की ज़िम्मेदारी दें। उन्हें व्यक्तिगत संपर्क भी बढ़ाना होगा। और केन्द्रीय रूप से भी आप सम्पर्क रख सकते हैं। यदि कोई सक्रिय लज्ना सदस्य है, तो यह तो नहीं हो सकता कि वह किसी स्थान को छोड़ें और किसी अन्य स्थान पर जाए और जमाअत से संपर्क न करे या बाहर से आएं और जमाअत से संपर्क करें। अगर कोई ऐसा नहीं करता है, तो वह एकमात्र महिला नहीं है, बल्कि पूरा परिवार ही बहुत पीछे हटा हुआ है क्योंकि अकेली महिला किसी भी स्थान पर नहीं जाती है। पूरा परिवार ही चला जाता है। या तो उनके उहदेदारों के साथ व्यक्तिगत झगड़े या नाराज़गियां हैं जिन्हें वे नहीं बताना चाहते हैं। अगर अधिकारी सीधे हो जाएं तो लोग भी ठीक हों जाएंगे। यदि 91% ख़ुत्बा सुनती हैं तो ऐसी समस्याएं नहीं पैदा होनी चाहिए।

सदर साहिब ने हुज़ूर अनवर से मार्गदर्शन करने का अनुरोध किया कि हम नौजवान बच्चियों को कैसे संलग्न करें। जब मैंने आमला बनाई थी तो जवान लज्ना थी मगर अब कुछ की शादी हो गई है और वह देश से बाहर चली गई हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया "जो भी पाकिस्तान से आई हैं, उन्हें भी ले लें ताकि वे समोई जाएं और उन को भाषा आ सके। लेकिन यहां की, जो विश्वविद्यालयों की पली बढ़ी हैं उन्हें भी ले नायबात बनाएं। इशाअत वालों की एक टीम होनी चाहिए। इसी प्रकार, जनरल सैक्रेटरी, तब्लीग़ तरबियत के क्षेत्रों से भी जुड़ें। इसी तरह आप की एक दूसरी लाईन भी तैयार हो जाएगी।

सैक्रेटरी इशाअत ने कहा कि इससे पहले हम लेख भिजवाते थे तो छप जाते

थे परन्तु अब इस्लाम के ख़िलाफ इतनी नफरत पैदा हो गई है कि समाचार पत्र प्रकाशित नहीं करते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : आपको अपना पैटर्न बदलना है। अब लोग समाचार पत्रों में ख़त और लेख पढ़ते हैं। आप इस्लाम के बारे में अधिक बात किए बिना अपना लेख लिखें। कहीं न कहीं इस्लाम का एक अनुच्छेद आ जाए। बजाय आप खुलेआम तब्लीग़ करना शुरु कर दें। आप का इस तरह से समाचार पत्रों में हस्तक्षेप करने में सक्षम होंगे। दो चार ख़त छुप जाएं। फिर समाचार पत्र की एक नीति होती है कि वे कुछ अच्छे ख़त फिर से छापते हैं। दिन का पत्र, सप्ताह, महीना, साल के नाम से, पत्र छपते हैं और उन्हें पुरस्कार भी मिलते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "आपको अपनी सोच बदलनी होगी है, हमें लोगों को कैसे जवाब देना है। खुले तौर पर जवाब न दें, हिक्मत से जवाब दें। यदि एक समाचार पत्र में एक दो बार ही नाम आ जाए तो आप उनकी सूची में आ जाते हैं। उसके बाद जब आप खुलकर लिखेंगी, तो आप से परामर्श करेंगे। कभी-कभी सीधा निर्देशिका दृष्टिकोण के बजाय कुछ घूम कर पहुंच बनानी पड़ती है। मैंने तो देखा है कि यदि विभिन्न विषयों पर उन लोगों के मनोविज्ञान बदलते हुए सहीह पहुंच की जाए तो प्रकाशित कर देते हैं।

सैक्रेटरी शिक्षा ने कहा कि हमने एक कुरआन कमेटी बनाई है जिसका लक्ष्य 100 प्रतिशत की उच्चारण ठीक हो जाए और अनुवाद पढ़ना सिखाया जाए। हम इस समिति पर कैसे कार्य कर सकते हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : पहले तो लिस्ट बनांए कि कौन-कौन पढना चाहता है। मज्लिसों में प्रत्येक को ख़त लिखा जाए कि हम ने कुरआन पाक देख कर पढ़ाना के काम शुरु किया है। इस में जो शामिल होना चाहती हैं वे अपना नाम भिजवाएं। चाहे वे दो चार हों या दस हों। उन्हें आप पढ़ाना शुरू करें। जब आप उन्हें पढ़ाएगें और बेहतरी की तरफ आएंगे और ध्यान पैदा होगा तो वे अपनी सहेलियों को बताएंगे। और धीरे-धीरे संख्या बढ़ेगी। पहले दिन शत प्रतिशत नतीजा नहीं दे सकतीं। यदि अच्छा उपचार किया जा रहा है और अच्छी तरह से पढ़ा जा रहा है और उन को यह समझ भी आ रही है तो अपने आप यह कक्षा फैलती चली जाएगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यहां जितनी पढ़ी लिखी हैं यदि बड़ी आयु की सहयोग नहीं करतीं तो न सही 18, 19,20 साल की बच्चियों को नायबात लगाएं। सारों को स्वीडिश भाषा भी तो अच्छी तरह से आनी चाहिए

सैक्रेटरी सेहत जिस्मानी ने पूछा कि क्या हम चैरिटी वाक कर सकती हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया लजना की चैरिटी वाक एक दो जगह करवाई हैं। वे तो सफल नहीं हुई हैं। मुश्किल पैदा होती हैं। क्योंकि यदि चैरिटी वाक सही करनी है तो फिर स्कार्फ ऊढ़ कर करनी होगी। एक दो जगह यह हुआ कि ख़ुद्दाम या अंसार ने करवाई और लज्ना पीछे चल पड़ी। आखिरकार यह हुआ कि लजना ने ख़ुद ही कहा कि अगर हम न करें तो बेहतर होगा। आप लोग यहां 300 की संख्या में हैं। आप क्या चैरिटी वाक करेंगी? हां, अगर अंसार या ख़ुद्दाम की तरफ से एक चैरिटी वाक जमाअत की तरफ से हो रही है और आप ने इस में शामिल होना है तो ड्रेस कोड का ध्यान रखा जाए। ड्रेस कोड सही है, तो फिर ठीक है शामिल हो सकती हैं। यह नहीं होगा कि हम टी शर्ट पहन कर आ जाऐंगी। लेकिन इस कोट के ऊपर स्कार्फ होना चाहिए। यदि साहस है, फिर साहस दिखाएं। यदि यहां की लड़कियों में से दो चार साहस दिखाऐंगी तो जो लोग स्थानीय हैं, उनकी शर्म भी दूर हो जाएगी। कम से कम आमला की सदस्य ही स्कार्फ पहन कर चली जाएं। लोग थोड़ा मज़ाक करेंगे फिर वे ख़ुद ही ठीक हो जाऐंगे।

सैक्रेटरी ख़िदमते ख़लक ने कहा कि हम और अधिक धन कैसे एकत्र कर सकते हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : अल्लाह तआला से सम्बन्ध स्थापित करें पैसे अपने आप इकट्ठा हो जाऐंगे।

सैक्रेटरी तब्लीग़ ने कहा है कि हमारी शूरा की सिफारिशों में से एक यह है कि रेडियो चैनल पर तब्लीग़ की जाए, लेकिन इस बारे में केवल एक मज्लिस के सारी स्थान पर परेशानियां हैं ।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया ,यदि आपको स्लॉट नहीं मिल रहा है, तो अपने व्यक्तिगत संपर्क बढ़ाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यह जो रकम आपने मीना कारी कर के जमा की है इस से पराजेक्शन के तरीके पैदाकरें। ख़िदमते ख़लक के विभाग को ओलड होमज़ में घरों में जाकर उन्हें तोहफे दें। स्थानीय समाचार पत्र के प्रतिनिधि को बुला लें। यह प्रचार के लिए नहीं है या इसलिए नहीं है कि हम ने प्रदर्शन करना है, बल्कि इसलिए हैं कि क्षेत्र में इस्लाम का परिचय करवाया जा सके के कारण। आप जो मीना बाज़ार या चैरिटी वॉक से धन एकत्रित करती हैं इन को यहां स्थानीय चैरिटी को भी दिया जा सकता है। इस तरह भी आप का परिचय हो जाएगा। कोशिश करनी पड़ेगी। परिस्थितियों के अनुसार, विभिन्न तरीकों की तलाश की जानी चाहिए। जब आपके लोगों के साथ कोई संपर्क नहीं है और स्लॉट कैसे प्राप्त किया जाता है। एक बार समाचार पत्र में आ गए तो दोबारा वह अपने आप प्रैस आ जाएगा। फिर जो रकम आप ने जमा की है एक हिस्सा मस्जिद और एक चैरिटी को दे दें। मस्जिद भी तब्लीग़ का माध्यम है और यह भी तब्लीग़ है।

सैक्रेटरी नई बैअत करने वाली ने कहा कि कुछ नई बैअत करने वालों को दस साल से अधिक का समय हो गया है, लेकिन वे लज्ना में एकीकृत नहीं हो सकीं। इसी प्रकार, वे सदस्य जिन्हें अंग्रेज़ी या स्वीडिश नहीं आती और रूसी बोलती हैं, हमने उनके लिए अनुवाद की प्रणाली स्काइप की माध्यम से रखी है। एक बहन कहती है कि मुझे नमाज नहीं आती और मैं अरबी में नहीं सीख सकती।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यदि तरबियत हो गई है और यह मुख्यधारा में आईं हैं, तो यह ठीक है। उनसे संपर्क करें और उनसे संपर्क बढ़ाएं। उन्हें बताएं कि अब आप लोग नई अहमदी नहीं रहीं। लेकिन उन की तरबियत के लिए एक विशेष सदस्यता स्लेबस होना चाहिए। और यह इस लिए एकीकृत नहीं हो पा रहे हैं कि आप लोग जब बैठती हैं तो उर्दू में बात करना शुरू करती हैं। उन को शिकायतें हैं। अपने कार्यक्रम अंग्रेज़ी या स्वीडिश में रखें।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: "जो लोग रूसी हैं, उन का लंदन में रूसी डेस्क से संपर्क करा दें, वे उन्हें संभालेंगे।" इसी तरह, फारसी और अरबी बोलने वालों का भी संपर्क करवा दें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : और जिसे नमाज़ नहीं आती हो उस कहें कि कम से कम सूरत फातिहा सीखे क्योंकि हदीस के कि सूरत फातिहा के बिना नमाज़ नहीं होती। इस लिए सूरत फातिहा सीख लें और सि का अनुवाद याद करवा दें और बाकी को पढ़ना है अपनी भाषा में पढ़ती रहें।

सैक्रेटरी मॉल ने कहा कि कुछ ऐसे सदस्य हैं जो कमाती हैं लेकिन प्रतिशत के अनुसार चन्दा अदा नहीं करती हैं। हम इस बारे में क्या कर सकती हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : आप ने ध्यान दिलाना है कोई ज़बरदस्ती तो नहीं है और न ही कोई टैक्स है चन्दा तो वित्तीय कुर्बानी की तरफ ध्यान दिलाना है। अगर वह छुड़वा लें कि हम चन्दा नहीं दे रहे और गलत कर रहे हैं तो इतनी ही काफी है। यदि तरबियत का विभाग सक्रिय हो जाए और यदि उन की तरबियत ठीक हो जाए तो वे ख़ुद ही चन्दा देना शुरू हो जाऐंगी। आपको उन्हें मजबूर करने की आवश्यकता नहीं है बल्कि उन्हें याद दिलाना है। जो भी कुछ दे दे ठीक है। केवल यही एकमात्र चीज़ है कि जो चन्दा शरह से दे दे या बिल्कुल न दे वे उहदेदार नहीं बन सकते

इसके बाद, आमला के सदस्यों ने कुछ सामान्य प्रश्न किए, जिन्हें हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए उत्तर दिए।

आमला की एक सदस्य ने सवाल किया कि यहां स्वीडन में कार्ड सिस्टम को बहुत उभारा जो रहा है अगर हालात ख़राब हो जाऐं तो फिर क्या किया जाए। कहीं कैश को इस्तेमाल कर लें यहां सुरक्षित हो?

इस पर हुज़ूर अनवर फरमाया: अपने हाथ में नकदी रखें या इसे बैंक में रखें। वहां सुरक्षित रहेगा।

एक सदस्य ने सवाल किया कि जब कोई अमीर या मुरब्बी साहिब चन्दा के लिए तहरीक करते हैं तो क्या बैंकों से सूद लेकर चन्दा दिया जा सकता है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : मैं नहीं समझता कि यह अच्छी बात है। यदि जमाअत नियमित रूप से अपने

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 1 November 2018 Issue No. 44

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

रिश्ते के कारण थोड़ा सा क्रेडिट ले लेती है, तो इसका त्वरित समायोजन होता है। लेकिन जो आप व्यक्तिगत रूप से हैं वह सही नहीं होगा। हां, अगर बैंक के पास बहुत पैसा है और उस पर ब्याज मिलता है, तो वे आपको इस्लाम के लिए प्रकाशन दे सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति ऋण लेकर चन्दा देने की तहरीक करें तो मुझे लिखें और उन से कहें कि केंद्र का आदेश दिखाएं।

इस पर, आमला की सदस्य ने कहा कि इस तरह की कोई तहरीक नहीं की गई

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : बलिदान वह है जिसे आप अपने ऊपर बोझ डाल कर सकते हैं। यह नहीं कि अपने ब्याज का ऋण उठा कर बलिदान करें।

एक और सदस्य ने पूछा कि अगर पति पत्नी ने एक साथ बैंक से ऋण के साथ घर लिया हो। पत्नी वसीयत करना चाहती है और पति नहीं मानता कि अभी कर्ज़ है तो इस तरह की अवस्था में क्या किया जाए?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "बात यह है कि घर हर जगह कर्ज़ पर या उधार पर लिए होते हैं। प्रति वर्ष अदा होता रहता है। यह हर महीने किस्त होती है। अगर आप वसीयत करनी चाहती हैं तो यह घर संपत्ति के रूप में लिखा जाएगा। और यदि इसका हिस्सा संपत्ति अदा करना है, तो जितनी संपत्ति के हिस्से अदा हो चुके हैं उस का हिस्सा जायदाद अदा कर सकती हैं। जायदाद का मूल्य निकाल कर 5 साल के लिए हिस्सा अदा करें। और यदि यह तब भी नहीं है, तो जितनी किस्त अदा की जी चुकी है, इतने हिस्से की वसीयत अदा करती जाएं। और अगर इंसान किस्त अदा करने से पहले मर जो जितनी किस्त अदा हो चुकी है वह आप की जायदाद है बाकी तो बैंक की जायदाद होगी। वसीयत का विभाग केवल उतने हिस्से की वसीयत मानेगा जितने की किस्तें अदा हो चुकी होंगी। बाकी अगर पति कहता है कि नहीं करनी तो घरों में फसाद पैदा नहीं करना। अगर पति पत्नी की आपस में कोई अंडरसटेंडिंग नहीं है तो रहने दें। पहले बजाय, लड़ने के घरों में शांति पैदा करें। और बजाय फित्ना पैदा करने के आपसी समझ पैदा करें।

एक सदस्य ने सवाल किया कि लोग सीरिया से यहां आ रहे हैं। यह एक विकल्प है कि उनके बच्चे अपना सकते हैं। सरकार से भी आज्ञा है। क्या अहमदी परिवार कर सकते हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया , यदि सरकार की तरफ से अनुमति है, तो कर सकते हैं। लेकिन क्या फिर उन का माता पिता के साथ सम्बन्ध समाप्त हो जाएगा? पूरी कस्टडी किस के पास होगी? कितनी सरकार की ज़िम्मेदारी होगी और कितनी आप की होगी ? पहले यह कानून पता करवाएं । उसके बाद फिर ठीक है एडाप्ट करने में कोई परेशानी नहीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ राष्ट्रीय मज्लिस लजना इमाउल्लाह स्वीडन की यह मुलाकात साढ़े सात बजे तक जारी रही।

फैमली मुलाकातें

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय पधारे और परिवारों की मुलाकातें शुरू हुईं।

आज की शाम के इस सत्र में, 26 परिवारों के 70 लोगों ने अपने प्रिय आक़ा से मिलने का मौका प्राप्त किया। इन मुलाकातों में भाग लेने वाले परिवारों में गोथन बर्ग जमाअत के अतिरिक्त कालमार जमाअत से आने वाले परिवार थे। जो 345 किलोमीटर की दूरी तय कर के मुलाकात के लिए पहुंचे थे।

इसके अलावा, पड़ोसी देश नॉर्वे और फिनलैंड से आने लोगों ने भी मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। नॉर्वे से आने वाले 295 किलोमीटर और फिनलैंड से 1082 किलोमीटर की दूसरी तय कर के आए थे। इन सभी परिवारों ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर दया करते हुए छात्रों और छात्रों को कलम प्रदान किए और युवा बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान किए।

मुलाकातों का यह प्रोग्राम 8 बज कर 45 मिन्ट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर पधारे।

आमीन का आयोजन

9 बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ मस्जिद नासिर तशरीफ़ लाए और आमीन समारोह का आयोजन हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने निम्न 27 बच्चों और बच्चियों से कुरआन की एक एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई।

निम्नलिखित भाग्यशाली बच्चे और बच्चे इस कार्यक्रम में भाग ले रहे थे। प्रिय अमान अहमद ख़ान, हमज़ा अहमद ख़ान, वालिद अहमद, मुतह्हर अहमद ख़ान, फारान रशीद डोगर, फैज़ान मलिक, अनसर अहमद, रिज़वान रशीद डोगर, यूनुस शेख, फारस महफूज़ सारब जहांगीर, अबीर अहमद, प्रिया आफिया रफी, दुर्रे अदन, शेला अहमद, अतिया रशीद डोगर, दानिया अमीनी, आयशा ख़लूद, आयशा इलाही, आयशा बशीर, गज़ाला सुल्तान, दानिया चौधरी, महविश ख़ान, तमरीन ज़फर, बरीरह अनवर, कनज़ह शेख, सलमानह अकमल।

अमीन के आयोजन के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने मग़रिब तथा इशा की नमाज़ जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

स्वीडिश नेशनल टेलीविजन (Sveriges Television Vast) ने आज 20 मई को अपनी शाम प्रसारण में निम्नलिखित खबर दी है

(यह राष्ट्रीय टेलीविजन पश्चिमी शाखा है। इस क्षेत्र में 1.2 मिलियन लोग रहते। समाचार में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ और जमाअत का परिचय करवाया गया। इस खबर के साथ ऑनलाइन एक लेख भी प्रकाशित किया गया।

स्वीडन की पहली मस्जिद जो जमाअत अहमदिया है यहाँ ख़लीफा मिर्ज़ा मसरूर अहमद दौरे पर आए हुए हैं। आज का जुम्अ: वह पढ़ा रहे हैं जो 207 देशों में सीधा प्रसारित किया जाएगा और लाखों लोगों तक पहुंच जाएगा।

यह गोथेनबर्ग का दूसरा सफर यात्रा है और जमाअत के लोग इस बहुत बड़ा सम्मान समझते हैं। मेरे लिए बेहद ख़ुशी का सबब है कि हुज़ूर आ रहे हैं। दौरा स्वीडन का आरम्ब माल्मो से हुआ था जहां हुज़ूर अनवर ने एक नई मस्जिद का उद्घाटन किया था, फिर स्टॉकहोम में कुछ कार्यक्रम थे और अब अंत गौथन बर्ग में हो रहा है, काशिफ विर्क का कहना है कि जो इमाम हैं, लाखों मुसलमानों के प्रमुख ख़लीफा मिर्ज़ा मसरूर अहमद का संबंध पाकिस्तान से है,लेकिन आवास लंदन में है। आप 207 देशों में लाखों मुसलमानों के प्रमुख हैं। अहमदिया एक सुन्नी समुदाय है जिस की नींव भारत में डाली गई। उनकी स्थिति कुछ मुस्लिमों के करीब विवादास्पद है, क्योंकि उनका नबुव्वत के बारे में आस्था अकेली है। उन्हें कई देशों में विपक्ष का सामना करना पड़ता है। स्वीडन में एक हज़ार लोग हैं और कई लोगों ने ख़लीफा से मिलने के लिए लंबी यात्रा की है।

स्वीडन की यात्रा के दौरान, अंतरराष्ट्रीय मीडिया में मिर्ज़ा मसूर अहमद को "मुस्लिम पोप" के रूप में प्रस्तुत किया गया है। लेकिन स्वीडिश मीडिया में, आप में से अधिकांश प्रश्न महिलाओं से हाथ मिलाने और समलैंगिकता से संबंधित इस्लामी शिक्षा के बारे में पूछा गया है।

ख़लीफा चरमपंथ के ख़िलाफ गर्मजोशी से काम कर रहे हैं और शरणार्थियों की समस्याओं के बारे में बात करना उनके लिए महत्त्वपूर्ण है। अहमदिया जमाअत का लक्ष्य "मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं" है।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad